# विपदा

लेखिका
उमा नेहरू

# विपता

लेखिका

श्रीमती उमा नेहरू

हिन्दुस्तान प्रेस—इलाहाबाद

१९२९

PRINTED AND PUBLISHED
BY THE HINDUSTAN PRESS ALLAHABAD

# विपता

जान मेज़फ़ील्ड के अँग्रेज़ी ड्रामा

"ट्रैजिडी आफ़ नैन" का हिन्दी अनुवाद

## ड्रामा के

### एक्टर और उनके पार्ट

विलियम पारजिटर—एक मामूली हैसियत का किसान

मिसेज़ पारजिटर—विलियम पारजिटर की बीबी

ज़ेनी पारजिटर—मिस्टर और मिसेज़ पारजिटर की लड़की

नैन हार्डविक—बिन माँ बाप की लड़की मिस्टर पारजिटर की भान्जी

डिक गर्विल—गांव के एक खुशहाल किसान का शौक़ीन मिज़ाज बेटा।

जैफ़र पियर्स—बाजा बजाने वाला। अस्सी बरं की उम्र। बहुत ग़रीब। कुछ पागल सा।

आरटी पियर्स—जैफ़र पियर्स का रिश्तेदार

टौमी आर्कर—गांव का एक लड़का

एलिन }
सूज़न } —दो लड़कियाँ

मिस्टर ड्रू—गांव के पादरी

केप्टन डिकसन—सरकारी पुलिस अफ़सर

हार्टन—पुलिस का सिपाही

# भूमिका

मेज़फ़ील्ड की "ट्रैजिडी आफ़ नैन", जिसका अनुवाद "बिपता" है अपने तर्ज़ का एक बिल्कुल ही अनोखा ड्रामा है। बोल-चाल देहाती, जगह एक किसान का घर, लोग देहाती मर्द औरतें, मौक़ा एक छोटी सी दावत। चार पांच बजे शाम से कहानी शुरू होकर दस ग्यारह बजे रात तक खतम हो जाती है। इतने थोड़े समय में और इन छोटी मोटी सीधी सादी रोज़मर्रा की बातों में मेज़फ़ील्ड ने "नैन" ही की नहीं बल्कि इन्सान की ज़िन्दगी की सब से गहरी और दुखभरी ट्रैजिडी (बिपता) की तसवीर खींच दी है। इसी लिए मैंने इस किताब का नाम "बिपता" रक्खा है।

इस पुस्तक को पढ़ कर हम हैरान रह जाते हैं कि इङ्गलिस्तान के मशहूर कवि शेक्सपीयर के ज़माने से लेकर, मेज़फ़ील्ड के समय तक अंगरेज़ी ज़बान और विचार कहां से कहां जा पहुंचे। शेक्सपीयर की शायरी की बहारें, ऊंचे ख़्यालों के अनघट आकाश पर बहती हुई गंगा के समान हैं। मेज़फ़ील्ड ने देहाती टूटी फूटी ज़बान में, अधकच्चे ख़्यालों में और ग़रीब किसानों की रोज़मर्रा

की बातों में इसी आकाश गंगा को ज़मीन पर बहाकर दिखा दिया है। मैं तो इस किताब को पढ़ कर दंग रह गई। आज से कुछ ही समय पहले तक हमारी नज़रें ऊपर ही को उठी रहती थीं। राजाओं, रानियों रईसों, और अमीरों, की मुसीबतों में ही हमें इन्सान के जीवन की असली ट्रैजिडी दिखाई दिया करती थी। और छोटे बड़े सब इन्हीं के दुःखों और सुखों के राग अलापा करते थे। पर अब वह पुराने सब्ज़ बाग़ मुरझा गये और मुरझा रहे हैं। आसमान की तरफ़ से अब हमारी निगाहें कुछ ज़मीन की तरफ़ को फिर रही हैं। और यह दिखलाई देना शुरू हो गया है कि दुनिया की सब से बड़ी बिपता ग़रीबों का जीवन है। और उन्हीं के सुख दुःख की ओर ध्यान देना, उनकी तस्वीरें दिखा कर सोतों को जगाना शायरी और साहित्य का असली और पवित्र कर्तव्य है। "ट्रैजिडी आफ़ नैन" जैसी पुस्तकों की सब से बड़ी ख़ूबी यह है कि वे हमारे ख़्याल को अमीरों और रईसों के जीवन से हटा कर ग़रीबों के दुःखों की ओर ले जाती है। ऐसे घर बहुत कम होंगे जिन में 'मिसेज़ पारजिटर' और 'नैन' न हों। उन घरों की हालत को सुधारना, गिरे हुओं को उभारना ज़िन्दगी की सब से बड़ी आवश्यकता है। "ट्रैजिडी

आफ़ मैन " इस आवश्यकता की जीती जागती तसवीर खैंच कर हमारे सामने रख देती है। इसी लिये मैंने इसका अनुवाद किया।

अनुवाद करने में जो कठिनाइयाँ हुईं वह बयान नहीं की जा सकती। इनका कुछ अन्दाज़ा उसी को हो सकता है जो मेज़फ़ील्ड की किसी पुस्तक के दो एक सफ़ों का तर्जुमा करके .खुद देखे। मुझे एक कठिनाई और भी थी। मैंने सोच लिया था कि किताब भर में ऐसा एक लफ़्ज़ भी न आने पाये जो अनपढ़ मुसलमान या हिन्दू औरत या मर्द न समझ सकें। यह बात मैं कहाँ तक निबाह सकी पढ़ने वाले .खुद ही देख सकेंगे। नाटक के एक्टरों के नाम इस लिये नहीं बदले कि यूरोप के और हमारे रहन सहन में बड़ा फ़र्क़ है। नाम बदलने से यह फ़र्क़ बहुत खटकता।

ज़बान ऐसी रक्खी गई है कि जो मामूली ईसाई घरानों में बोली जाती है। महावरे मिले जुले इस्तेमाल किये गये हैं जो मैंने .खुद हिन्दू और मुसलमान घरानों में बोले जाते सुने हैं।

इलाहाबाद
८-१-२९

उमा नेहरू

# एक्ट १

स्थान—सेवर्न नदी के किनारे श्राप्स-श्रोक में एक छोटे किसान के मकान की रसोई। सन् १८१० ई०।

[मिसेज़ पारजिटर सेब काट रही हैं और जेनी आटा गूँध रही है।—जेनी आले में आटे की मटकी उतारती है।]

जेनी—अम्मा, नौकरी से लौट के मुझे यह जगह बड़े अमन चैन की सी मालूम होती है।

मिसेज़ पारजिटर—हां, बच्ची! तेरे आ जाने से शायद अब मुझे भी कुछ चैन मिले।

जेनी—अम्मा! तमाशा तो देखो हमारी मालकिन बिछौने पर पड़े ही पड़े सवेरे चाय पी लिया करती थी।

मि० पा०—बच्ची, अब तू आ गई है तो शायद मुझे भी चाय-वाय नसीब हो जाया करे।

इतना कुछ झेल चुकी, तो अब कहीं यह दिन आया कि मेरे भी कुछ अंग लगे !

जेनी—ऐसा क्यों कहती हो, अम्मा ?

मि० पा०—इस लौंडिया की वजह से—और क्या ?—फिरती है कमबख्त बिजार बैल को मैं ढूँढ़े किये !

जेनी—कौन ? बहन नैन को कहती हो, अम्मा ?

मि० पा०—चल, काम कर अपना !... ...क्या कहूँ अभी मुआ सौदा भी नहीं आ चुका !

जेनी—अम्मा, मुझे तो सब चीज़ें बनती दिखाई नहीं देती। सूरज डूबते ही तो लोग आ जायेंगे।

मि० पा०—चीज़ें तो बनती ही हैं। बकती क्या है ?

जेनी—अम्मा, डिक गर्विल के सिवा और कौन कौन आ रहा है ?

मि० पा०—छोटा आर्ची पियर्स, बूढ़ा जैफ़र पियर्स, रौबर्ट वालों की लड़कियाँ और टौमी आर्कर।

जेनी—अच्छा! तो फिर तो अच्छी ख़ासी दावत हो गई, अम्मा?

मि० पा०—मेरे लिए तो न दावत न चावत जब तक यह नैन मूसल सी सामने है। कमबख़्त बिल्कुल ही अपने बाप की सी है!

जेनी—यह क्यों, अम्मा?

मि० पा०—सदा बनी ठनी, चिकनी चुपड़ी बनी फिरती है! बड़ी शऊर वाली, बिचारी!—भला जैसे कहीं कोई उसकी भी बराबरी कर सकता है!

जेनी—अरे!

मि० पा०—सदा लोगों की सुगड़ भलाई में लगी रहती है—जैसे वह इसके चहीते हों!

जेनी—सुगड़ भलाई कैसी, अम्मा ?

मि० पा०—उनके बच्चों को नहला धुला के बिचारी उनके होते सोतों का हाथ बटाती है ! कौन जाने यह दलिद्दर मारी के कीड़े कहाँ कहाँ लोटते फिरते होंगे ! इनके चीथड़े बैठे बैठे गूंथती है ! कोई पूछे भला यह काल को न्योता देना नहीं तो और क्या है ? कम बख़्त कहीं हम सब को भी न समेट बैठे—लगा दे रोग कहीं से लाके ! [ कुर्सी लाने जाती है ] क्यों री ! यह मैं तुझसे के हज़ार दफ़ा कहूँ तू यह अपनी चीज़ें इधर उधर न फेंकती फिरा कर ? देख तो, इस कुर्सी पर यह क्या पड़ा है ?

जेनी—क्या है, अम्मा ?

मि० पा०—है क्या ? यह देख, तेरा कोट है ! यह फट गया तो रोज़ तुझे कौन नये नये कोट बना देगा ? सुन रखओ ! यहाँ यह लापरवाई नहीं

चलेगी। सवेरे से शाम तक मुझे तेरे कमबख़्त कपड़े ही सम्हालते जाता है! अपाहज, फूअड़ कहीं की!

जेनी—यह कोट मेरा नहीं है, अम्मा! बहन नेन का है।

मि० पा०—तो अब तक मुँह क्यों सिल गया था? . . . अच्छा!—हाँ! तो यह उनका है! लाओ ज़रा देखूँ तो इनके खीसों में क्या है। [ जेब टटोलती है ] यह क्या? बन्नो की गोरी गोरी गर्दन के फ़ीते! . . . और यह क्या? [ एक काग़ज़ निकालती है ] अरे! अच्छा, यह बातें!

जेनी—अम्मा, यह क्या है? ख़त है क्या?

मि० पा०—यह चरित्तर!—अच्छा!

[ काग़ज़ को देखती है ]

जेनी—[ पीछे से झांक कर ] अम्मा! यह तो ठिक गर्विल के हाथ का मालूम होता है।

मि० पा०—तू जा अपना काम देख ! [ कागज़ को जेब में रख लेती है ] मैं उसे दे दूँगी। . . . दूर यहाँ से, कमबख्त ! मैं तेरे गुदड़े महंज झुकी। [ कोट को दूर एक कोने में फेंक देती है ]

जेनी—अरे अम्मा ! वह गंदी नांदि में चला गया !

मि० पा०—जाये !—मेरी बला से !

जेनी—बिल्कुल नास हो गया !—इसे अब वह क्या पहनेगी !

मि० पा०—पैंठे मुई जाड़े में !—सीखेगी तो !—चीज़ें इधर उधर फिकनी तो बंद होंगी ! . . . यह उधर कहाँ चली ?

जेनी—निचोड़ के टांग दूँ, अम्मा !

मि० पा०—खबरदार जो तूने हाथ लगाया ! और—

चल, इधर—काम कर अपना। यह मूँडी काटी जाने, उसका काम जाने !

जेनी—मूँडी काटी !—यह क्या कहती हो, अम्मा ?

मि० पा०—मैं यही कहती हूँ। वह है मूँडीकाटी !

जेनी—बहन नैन ?—यह क्यों ?

मि० पा०—अरे ! तो शायद तेरे बाबू ने तुझे अभी नहीं बताया !

जेनी—नहीं तो ! बात क्या है, अम्मा ?

मि० पा०—दौड़ ! दौड़ ! देख तो, शायद डिक सामान लेकर आ गया।

जेनी—[ खिड़की के पास जाकर ] कोई भी नहीं है, अम्मा !

मि० पा०—भाड़ में जाये ! . . . अच्छा तो सुन। पर देख पेट में रखना ! बात कहते फिरने की

नहीं है। सुना? इस्म के बाबू ने—इसी मेरी बहन नैन के बाबू ने—मेरे बाबू की बहन को ब्याहा था—

जेनी—यह तो मैं जानती हूँ, अम्मा!

मि० पा०—बात न काट। बड़ों की बात नहीं काटते! सुन। इन्हीं बीबी बम्मा के बाबू को जो आज दिमाग के मारे पाँव ज़मीन पे नहीं धरती—फाँसी हुई थी।

जेनी—फाँसी हुई थी?

मि० पा०—हाँ!—ग्लस्टर जेल में।

जेनी—क्या किया था, अम्मा?

मि० पा०—भेड़ी चुराई थी। यह किया था!

जेनी—अच्छा! इसी से उन्हें फाँसी हुई?

मि० पा०—भला ऐसा कहीं भलेमानसों में भी सुना है?

जेनी—इसी लिए मैन यहाँ आई है ?

मि० पा०—और नहीं तो क्या ? सब तेरे बाप के करतूत हैं ।

जेनी—अम्मा ! तो मैंने अच्छी नौकरी छोड़ी ! क्या जानती थी यहां चोर उचक्कों में आन फंसूंगी ।

मि० पा०—बच्ची, तेरे बाबू की मत मारी गई है ! इन पर ख़ुदा की मार है ! कौन जाने क्यों इस कमबख़्त को गले का हार बनाये हुए हैं !

जेनी—इसे देख के मामी याद पडती होगी ।

मि० पा०—पहले जिस का हाथ पकड़ा है उस का तो पूरा करें । मामियों, चाचियों की याद तो पीछे रही । मैं ही जानती हूँ जब से नैन इस घर में आई है, मुझ पे क्या बीत रही है ! मैं तो हाड़ मांस की हूँ । लोहा मुआ भी तो अब तक गल के रह गया होता !

जेनी—यह लो बाबू आ गये।

मि० पा०—सवेरे का खाना इन्हें अब नसीब होगा। चूल्हे पर से इनकी दारू का प्याला तो उतार ला।

जेनी—अम्मा, यहाँ तो न रोटी है न मक्खन। [ प्याले को चूल्हे पर से उठाती है। अँखियों से इधर उधर देखती है। प्याला छूट कर चूल्हे पर गिर पड़ता और टूट जाता है ]

मि० पा०—हाय कमबख़्त ! यह क्या किया ?

जेनी—छूट पड़ा। हाय ! हाय ! अब क्या करूँ ?

मि० पा०—हाथ में सत ही नहीं ! बेढंगी कहीं की !

जेनी—बाबू का यह बहुत प्यारा था। अब वह क्या कहेंगे ?

मि० पा०—भाग, ऊपर चढ़ जा ! भाग—दूसरे कमरे में !

जेनी—अब वह क्या कहेंगे ? जो कुछ न कर बैठें वह थोड़ा है। [ रोती है ]

मि० पा०—मैं उन्हें समझा लूंगी। रोती क्यों है? होनहार बात थी। भाग! उनके आने से पहले भाग जा!

अंजी—वह न जाने क्या कर बैठें! हाय रे! अब क्या करूं? [ जाती है ]

मि० पा०—[ ख़त निकाल कर ] अच्छा! बात यहां तक बढ़ गई! [ ज़ोर से पढ़ती है ]

डिक गरविल को प्यार करनेवाली प्यारी के नाम—

जाता था एक दिन मैं सड़क पर,
मिली परी एक न्यारी,
फिसल गया दिल देखते ही वह
चांद सी सूरत प्यारी।

गाल गुलाबी, मुखड़ा प्यारा
होठों पे मुस्काहट
निकल गया दिल सीने से
ज्यों इंजन भागे सरपट!

—अच्छा ! अच्छा ! ठिक भइया !—अब मुझे भी तुम्हें देखना है !

[ मिस्टर पारजिटर अंदर आते हैं। हाथ में लाठी है। बूढ़े आदमी, कद छोटा, बदन गठा हुआ। अभी तक खूब मोटे हैं ]

पा०—[ मिसेज़ पारजिटर की तरफ़ बढ़कर झुक के सलाम करके ] जेनी की अम्मा ! अब क्या हुकुम है ?

मि० पा०—हो आये बाजेवाले के घर ?

पा०—हो आया।

मि० पा०—आयेगा आज रात को ?

पा०—आयेगा—उफ़्फो ! यहां तो बड़ी तैयारियां हैं ! आज रात को क्या ग़ज़ब होनेवाला है। यह क़ीमे के समोसे तले जा रहे हैं क्या ?

मि० पा०—तुम इन क़ीमे के समोसों-वमोसों को मत खा लेना ! जानते तो हो भेड़ी किस बीमारी से मरी थी। उसे बाघी थी। [ कुछ रुक

कर ] रहा सेब का मुरब्बा ! वह कहां की अजूबा चीज़ है ?

पा०—गाना है, बजाना है, सेब के मुरब्बे हैं ! अब और अजूबा क्या होगा ?

मि० पा०—मुझे तो अजूबा यही होगा कि सब वक़ से तैयार हो जाये। जानते तो हो घर के काम में मुझे कितनी मदद मिलती है . .

पा०—हैं ! फिर वही दुखड़ा ले बैठीं !

मि० पा०—हाँ, ले बैठी ! दुखड़ा कहते हो—तो दुखड़ा ही सही !

पा०—अरे ! हैं !—यह क्या शुरू हो गया ?

मि० पा०—इस नैन का भरना आख़िर अब मैं कब तक भरती रहूंगी ?

पा०—सुन लो जी ! मेरी भांजी नैन उस वक़ तक इस घर में रहेगी जबतक मैं मर न जाऊँ

था जब तक उसकी शादी न हो जाये। [ कुछ ठहर कर ] समझ में आ गया—ना ? मालूम हुआ—मेरी क्या मरज़ी है ? अच्छी खासी लौंडिया है। मगर जब तुम अपनी झांता-किल-किल से उसे चैन भी लेने दो—

मि० पा०—झांता-किलकिल कैसा ?

पा०—जब किसी लड़की के साथ दिन भर झिक् झिक् होती रहेगी तो फिर वह कैसे भली रह सकती है ?

मि० पा०—मैंने कब उससे झिक् झिक् की ? ज़रा मालूम भी तो हो !

पा०—कब झिक् झिक् की ? यह तो बताओ जिस दिन से उसने इस घर में पाँव धरा है एक दिन भी तुम उससे सीधी तरह बोली ?

म० पा०—जैसा मैंने किया मेरा ख़ुदा ही जानता

है। पर जिसे विधना बिगाड़े उसे कौन सँवारे ? ऐसे नाठे निगोड़ों से तो दूर ही रहना अच्छा !

पा०—न जाने ऐसी बातों पर भी .खुदा तुम्हें कैसे चैन से रहने देता है ?

मि० पा०—वह अपने परायों को .खूब जानता है। समझे ? जेनी के अब्बा,—मेरी यह बात गाँठ में बाँध लो।

पा०—मैंने तो बाँध ली ! अब तुम भी ज़रा कान खोल के सुन लो ! आज से तुम इस घर में मेरी भांजी नैन और जेनी में तिल बराबर फ़र्क़ नहीं कर सकोगी।

मि० पा०—हमारी जेनी बिचारी भले आदमियों की बेटी है, और यह निगोड़-मारी तो छोकरी है. . .

पा०—मेरी बहन की ! सुन लिया—किसकी छोकरी है ?

मि० पा०—हाँ !—और एक चांडू की औ मुआ फांसी पे टांग दिया गया ! मैंने सदा फूंक फूंक के पांव रक्खा—अपनी बच्ची को बुरी सङ्गत से बचाया ! अब चाहे कुछ भी हो, मैं मुए कमीनों से नाता जोड़ने से रही !

पा०—सुन लो जी ! तुम्हें नैन को यहां रखना पड़ेगा— ख़ैरियत इसी में है कि अब तुम यह अपनी जली कटी बातें बिल्कुल बन्द कर दो ।

मि० पा०—जली कटी ? मैं जलूंगी किस से ?

पा०—हाँ, जली कटी ! तुम बेशक उससे जलती हो । . . . तुमने उसकी जान इसलिए ग़ज़ब में डाल रक्खी है कि वह मेरी बहन की सी है । याद है इसके बाप पर तुम ख़ुद कैसी लाहा-लोट थीं ? इसी लिए तुम इस की माँ से जलती थी । और अब इसी लिए इसकी भी जान तुम ने ग़ज़ब में डाल रक्खी है !

पा०—इत्तिफ़ाक़ कैसा ? कहां का इत्तिफ़ाक़ ?

मि० पा०—हाथ गीले थे। जानते तो हो, उसे हाथ धोने की कैसी लत है।

पा०—बे ढंगी—बे शऊर कहीं की !

मि० पा०—हाथ साबुन के मारे चिकने हो रहे थे—बिल्कुल इत्तिफ़ाक़ था !

पा०—अच्छा ! तो यों गिराया—क्यों ?

मि० पा०—नहीं, देख न सकी कि कहां जा रही है। सूरज सामने था। आंखें चौंधिया गईं। कुछ ऐसा ही हुआ। वह तुम्हें आप ही सब बतायेगी।

पा०—हाय ! मेरे दादा के वक़्तों का टोबी ! मेरा पुराना टोबी ! इस से तो मुझ को ही मार डालती तो अच्छा था ! [ रोटी मक्खन अलग सरका

देता है ] अब मैं रोटी क्या खाऊँ !—ख़ाक खाऊं ! बदतमीज़—बेढंगी कहीं की !

[ नैन जाती है । बूढ़ा पारसिगर इस बीच में बराबर उसकी तरफ़ सख़्ती से घूरता रहता है । ]

नैन—मामूँ ! आप बड़ी जल्दी लौट आये ?

मि० पा०—फिर तू कह ?

नैन—क्या, मामी ?

मि० पा०—"क्या मामी" ! कहो, जी भर के शीशा देख चुकी ?

नैन—कौन सा शीशा ?

मि० पा०—कोठे वाला—और कौन सा शीशा ?

नैन—मैं बिछौने-बिछौने सब बिछा आई । शायद इसी पर आप बिगड़ रही हैं ?

मि० पा०—मामूं के सामने ऐसे ही बोलते होंगे ?—क्यों ?

[ नर्मी से ] क्या कहूं जो मुंह में आता है बक देती हूँ।

पा०—बस, बस, रहने भी दो ! लाओ—खाना तो लाओ। [ रोटी मक्खन लाकर सामने रखती है। पारजिटर प्याला उठाने चूल्हे की तरफ़ जाता है। ]

पा०—बड़ी मेहरबानी [ देखता है कि प्याला टूटा पड़ा है। ] अरे—रे—रे—बीबी ! तुमने मेरा टोबी तो नहीं तोड़ डाला ?

मि० पा०—देखो, देखो ! बिगड़ो मत। होनहार बात थी।

पा०—मैं पूछता हूं मेरा टोबी तो नहीं टूटा ?

मि० पा०—कहती तो हूँ, होनहार थी—बिल्कुल इत्तिफ़ाक़ था। [ उसके टुकड़े उठाती है ]

पा०—यह आख़िर तोड़ा किसने ? और मुझे अब तक बताया क्यों नहीं ?

मि० पा०—कहती तो थी कि तुम्हें आप बता देगी!

पा०—कौन?—मैन तो नहीं? उससे तो नहीं टूटा?

मि० पा०—कहती तो थी तुम्हें फ़ौरन बता देगी। होनहार बात थी! बिल्कुल इत्तिफ़ाक़ था!

पा०—इत्तिफ़ाक़ से तो मेरा शीशा नहीं टूट सकता था!

मि० पा०—देखो! फिर वही—बात क्या है? हम इस से अच्छा नया प्याला मोल ले लेंगे।

पा०—पर मैं तो पचास बरस से अपनी दारू इसी में पीता था!—मेरे दादा के वक़्तों की चीज़ थी!—फिर मुझे इसका कुछ दर्द हो कि नहीं?

मि० पा०—वह आप सब बतायेगी। बिल्कुल इत्ति-फ़ाक़ था! क्या करे? बिचारी घबराहट में थी। शाम के लिए ठीक ठौर कर रही थी। बिल्कुल इत्तिफ़ाक़ था।

पा०—मैं ख़त-वत नहीं देखूंगा । जहाँ से निकाला है, वहीं रख दो । मेरी समझ में तो इससे अच्छी बात डिक ने आज तक नहीं की। बिचारा समझदार लड़की चाहता है।

मि० पा०—तो तुम इसे उस से शादी कर लेने दोगे? . . . क्यों? सगाई जेनी से, बधाई नैन से!—है ना? और चाहे इस में जेनी का दिल मसल के रह जाए तो रह जाए!

पा०—जेनी के दिल भी है कहीं!

मि० पा०—कुछ भी हो, जेनी तो अपना सुहाग-सेहरा डिक गरविल के बांध चुकी। तुम्हारा दिल कैसे ठुकता है कि अपनी ही लौंडिया को कलंक लगा के बैठ जाओ!

पा०—उसे कलंक क्या लगाऊंगा? वह तो कूड़ा है—कूड़ा—जिस में न मेहर न मोहब्बत!

एक नैन हमारी, इस की सी सौ जनियों से अच्छी है !

मि० पा०—और तुम चाहते हो मैं भी तुम्हारी तरह टुकुर टुकुर देखती रहूं ? और यह गोल दीदों वाली, कलमुँही चुड़ैल मेरी लौंडिया का वर व्याह ले ?

पा०—वह तुम्हारी लौंडिया का वर नहीं है। डिक तो हर किसी की लौंडिया पे फ़िदा रहता है ! अगर उस में इतनी समझ आ जाये कि वह हमारी नैन को व्याह ले, तो हमेशा के लिए आदमी बन जाये। . . . चलो—खाना तो लाओ मेरा !

मि० पा०—अरे तोबा ! मैं भूल ही गई। तुम्हारी बातों ने मुझे आपे से बाहर कर दिया।—नहीं मालूम झुंझलाहट में क्या क्या कह गई !

मि० पा०—अहा ! वाह वा ! क्या बात कही ! कोई सुने ज़रा—

पा०—क्या झूठ है ? मैं तुम्हें ख़ूब जानता हूं ! इस बीस बरस में तुम्हारी नस नस पहचान गया हूँ ।

मि० पा०—सुनो, ज़रा धीरज से मेरी बात सुनो ! देखो, अगर तुम्हारी लौंडिया को कोई बे इज़्ज़त करे, कोई नुक़सान पहुँचाये, तो तुम बैठे टुकुर टुकुर देखा करोगे ?

पा०—भला इसका यहाँ क्या ज़िक्र है ?

मि० पा०—बताती हूं, सुनो । जब शुरू में यह उजड़ी हमारे यहाँ आई . .

पा०—बैन कहो, बैन ! . . मेरी नाक के सामने यह काग़ज़ क्यों नचा रही हो ?

मि० पा०—सुनो ! हम समझते थे ना कि जहाँ जेनी

नौकरी से लौटी उसका ब्याह डिक गार्विन से हो जायगा ?

पा०—यह तो डिक के दिल की बात थी जेनी के बस की तो थी नहीं !

मि० पा०—उफ़, तोबा ! जैसे डिक का मिलना भी कोई ऐसा पहाड़ था ! नौकरी पे जाने से पहले जेनी और वह एक दूसरे के पीछे लगे फिरते थे कि नहीं ? और डिक उस पर लट्टू था—कि नहीं ?

पा०—उसी पर क्या ? डिक तो बीसियों पर लट्टू रहता है ।

मि० पा०—कहीं भी नहीं ! बस जब से यह निगोड़-मारी आवारा यहाँ आई है, डिक इसी पर दिवाना है। यह देखो ! . . . भला इस ग़ज़ब का क्या ठिकाना ! [ खत दिखाती है ]

लोग तुम्हारे गुन गाते हैं, कि तुम मुझ जैसी के साथ कैसी नेकी कर रही हो! नेकी करोगी—और तुम! तुम जिस ने मेरा जीना हराम कर दिया! जो एक तरफ़ मेरा कलेजा खाती है और दूसरी तरफ़ अपनी नेकी की तारीफ़ें सुन सुन कर राल टपकाती है—और झूठ बोलती है—मुझ पर झूठे तूफ़ान लगाती है। ज़लील नहो तो! बनती हैं धर्मात्मा और बोलती फिरती हैं झूठ!

पा०—[ गुस्से से ] हैं! नैन! ख़बरदार, जो ऐसी बातें कीं! हो चुका बस! जाओ यहाँ से फ़ौरन।

मि० पा०—नहीं, यह जायगी कैसे? मैं इसे पहले तमीज़ सिखाऊँगी। [ नैन से ] सुनरी! यह तुझे याद रहे!—यह टुकड़े जो तू यहां रोज़ बड़े

चाव से तोड़ती है—ये मेरे और इन मासूँ के ही तुफ़ैल में तुझे मिलते हैं ।

नैन—टुकड़े मिलते हैं ?

मि० पा०—मुकर जा ! खाने से भी इनकार कर दे ! ख़ुदा झूठ न बुलाये तो ठूँसती थाली भर भर के है !

नैन—ठूँसती नहीं ! ज़हरमार करती हूं—ज़हरमार ! तुम हर निवाले को अंगारा बना देती हो, जिस से गले से लेकर मेरा कलेजा तक भुन जाता है !

मि० पा०—जिस घर में बलबला रही हो यह भी हमारा है ! जो तुझ जैसियों को कहीं नसीब भी नहीं हो सकता था !

नैन—घर ! क़ैदी की काल-कोठरी भी तो उसका घर होता है।

मि० पा०—कौन से तेरे ऐसे सगे थे जो तेरा बाप चढ़ता फांसी पे और तुझे बिठाते छाती पे?—मैं ही ऐसी थी जिसने तेरे मामूँ से कहा—

नैन—मैं जानती हूँ जो तुम ने मामूँ से कहा था। 'पादरी साहब इस लौंडिया को घर में रख लेने को कहते हैं।' यही तुम ने मामूँ से कहा था? न कहती तो करतीं क्या? जानती थीं पादरी साहब का बीच है, न माना तो बात फैल जायगी। दुनिया जहान पर तुम्हारा भरम खुल जायगा—सब जान जायँगे असल में तुम हो कैसी! यही तुम्हें डर था—इसी लिए तुमने मुझे अपनी चौखट पे चढ़ने दिया। [ दबी आवाज़ से ] मामी! तुम समझती हो मैं जानती नहीं! मैं ख़ूब जानती हूँ। [ कुछ रुक कर ] बाज़ार में जिसे देखो कहता है 'तेरी

मामी ने अपने नाते की लाज रक्खी।' 'मिसेज़ पारजिटर ने तुझ से ख़ूब ही अपनाहत निबाही!' गिरजे में मिसेज़ ड्रू हैं। उन्हें भी यही रट लगी रहती है। 'अपनी मामी का तू जितना गुन माने थोड़ा है।' बस यही कहती रहती हैं। और तुम मुसकुराती हो। यह सब सुन सुनकर फूलों नहीं समातीं! अपनी बड़ाइयाँ को बड़े चाव से, मज़े ले ले के, गटगट पी लेती हो! या लोगों को दिखाती हो कि आन पड़े की बात है। जैसे तुम पर बड़ी बिपद पड़ गई है! क्या करो विधना धरे बन्दा भरे।—जैसे तुम ही हो जो मुझ जैसी का भरना भर रही हो! . . . तुम समझती हो मैंने सुना नहीं! मैं इन्हीं कानों से तुम्हें कहते हुए सुन चुकी हूँ। 'मुझे अपने किये का ख़ूब बदला मिल रहा है!' तुम यही कहती फिरती हो। मुख से नहीं—मन से।

मि० पा०—चल, बन मत। ये हीरे की सफ़ाई कोई देखे!

नैन—अब माफ़ कर दो, मामी!

मि० पा०—देख! तेरी इन्हीं बातों से मुझे जूड़ी चढ़ आती है।

नैन—मामी, सर के दर्द का पुराना दौरा तो नहीं उठ रहा है?

मि० पा०—तू ही मेरे सर का पुराना दर्द है! आदमी कभी तो किसी का कुछ गुन माने!

नैन—जब जब गुन माना तुमने कहा बनती है!

मि० पा०—ओहो! वह किस दिन तू ने गुन माना? मैं भी तो ज़रा सुनूँ।

नैन—जब मैं यहाँ आई आई थी, मुझसे जो कुछ हो सकता था मैं ने किया—जी तोड़ के किया!

समझती थी जो जान मार के काम करूंगी—
तुम्हारी सेवा करूंगी, तो तुम मुझे चाहोगी !

मि० पा०—हां ! तो तू यह समझती थी—अच्छा !

नैन—सवेरे तुम्हारे उठने से पहले ही मैं तुम्हारे
लिए चाय बना दिया करती थी। खाने के झूठे
बरतन मांज दिया करती थी, जिसमें तुम दो-
पहर को ज़रा आंख झपका लिया करो। जब
से आई घर का एक कपड़ा भी तुम्हें धोने
नहीं दिया।

मि० पा०—तो कौनसा तीर मारा ? आख़िर हमने
भी तो तेरे लिए कुछ किया होगा ?

नैन—मेरे लिए किया होगा ! तुमने कभी भी मेरे
लिए कुछ किया ?

मि० पा०—रहने को घर किस ने दिया ?

नैन—यह भी घर है ?
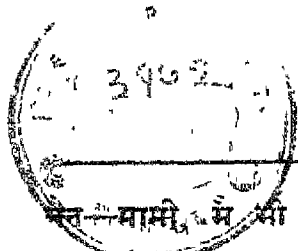
नैन—मामी, मैं भी सब करवा लूं ।

मि० पा०—नहीं, मुझे तुझसे करवाने की ज़रूरत नहीं । चल, अपना काम देख ।

नैन—मैं अपना सब काम कर चुकी, मामी !

मि० पा०—[ झिड़क कर ] ख़बरदार जो मुझसे ज़बान लड़ाई!

नैन - मैं सचमुच कर चुकी ।

मि० पा०—मैं जानती हूँ जैसा कर चुकी होगी। मैं तेरे काम करने के ढंग ख़ूब जानती हूँ । सब फिर से दोहरवाऊँगी—मैंने सोच लिया है । सब फिर से न दोहरवाऊं तो सही !

नैन—यह आटा गुजियों के लिए गूंधा है ?

मि० पा०—तुझसे मतलब ? [ नैन बेलन उठाती है ] रख बेलन ! रख—फौरन । सुना, कि नहीं ?

नैन—लाओ मामी ! मैं भी हाथ बटवा लूँ । शाम होते ही तो लोग आ जायेंगे ।

मि० पा०—आ जायेंगे ना आ जायें—तुझे क्या ? मैं जानती हूँ आ जायेंगे । तू मुझे सबक़ न पढ़ा । [ नैन चकले की तरफ़ दबे पांव जाती है ] . . . यह क्या ? यह चोरों की तरह दबे पांव किधर चली ? चोट्टी कमबख्त, ! जैसा इस का बाप चोट्टा था !

नैन—( नर्मी से ) जिस में जूते की खटपट तुम्हें बुरी न लगे, मामी !

मि० पा०—बुरी न लगे !—अब भी बुरा लगना बाक़ी है !—तो उठा क्यों रक्खा है ? वह भी अरमान निकाल ले, बच्ची !

नैन—क़ुसूर हुआ, मामी ! अब जाने दो !

मि० पा०—हाँ ! सच कहती है—होता है । जब तक फाँसी पे टंग न जाय, बेशक होता है ! और यह तो बताओ, यह तुम्हारे कपड़े कहाँ से आये ? यही—जिनमें तुम सजी खड़ी हो ! हाँ ! अच्छा याद पड़ा ! देख, उठा वह अपना दलिद्दर कोट उस नांद में से । यह उस में क्यों डाल रक्खा था ? क्या अब सुअरों को भी ज़हर देकर मारेगी ?

नैन—[ सुअरों की नांद की तरफ़ मुड़ती है ] हाय ! हाय ! यह किसने इसमें डाल दिया ? [ रूआसूओं हो कर ] एक बिचारी ग़रीब के कोट का नास करके तुम्हारा जी बड़ा ख़ुश हुआ होगा ! बिल्कुल नास हो गया । हाय ! इसे मैंने कैसे जुगा जुगा के रक्खा था ! [ जेब से फ़ोते निकालती है ] यह भी नास हो गये ! अब यह सब कहाँ मिलेंगे ! तुम्हीं ने इसे

नांद में डाला है। तुम्हारा दिल जानता है।

मि० पा०—मैं तेरे दलिद्दर चीथड़ों को नांद में डालूँगी ? अब की मेरा नाम लिया, तो देखना तुझी को नांद में न झोंक दूँ ! सुन ले ! मेरे मूँह न लगना नहीं तो एक दिन कोड़ों से हलाल करूँगी और तभी तू ठीक भी होगी !

नैन—[ आंसू छिपाने को मूँह फेर लेती है ] तुम इंजील पढ़ती हो, गिर्जा जाती हो। तिस पर यह करनी ! एक ग़रीब दुखियारी का कोट नांद में डाल कर ऊपर से मुसकुराती हो !

पा०—बस, चुप ! चुप ! चुप ! रात का भी कुछ ध्यान है या नहीं ? यह कुत्ते बिल्ली की सी म्याऊँ—म्याऊँ ख़तम भी होगी या नहीं ?

मि० पा०—[ टोकने पर झुंझला कर ] तुम्हारा क्या बीच है? तुम दख़ल न दो। [ नैन से ] सुन! तुझसे कहती हूं—तुझ से। काली, कटखनी, निर्मोही कुतिया!—निगोड़मारी कहीं की! न जाने यह नचे सा काले दिल लेकर अपने ख़ुदा को मरे पीछे कैसे मुँह दिखायेगी!

नैन—[ नफ़रत से ] उफ्फ़ो री ख़ुदावाली! [ अपने भीगे कोट को निचोड़ती है ]

मि० पा०—देख! तुझे इस 'उफ्फ़ो' का मज़ा चखाती हूं।—क्यों? यह सुअरों का गदला पानी घर भर में टपकायेगी? डाल कोट को नीचे! इधर ला, मुझे दे! छोड़ जल्दी! [ कोट को ज़ोर से पकड़ लेती है और मरोड़ कर नैन के हाथों से छीन लेने की कोशिश करती है ]

नैन—ख़बरदार, जो तुमने इसे छुआ। छोड़ दो इसे।

मि० पा०—मुझ से ज़िद ? छोड़ इसे !

नैन—नहीं छोड़ूंगी ! देखो, मत छोड़ो—मत छोड़ो ! देखो ! फटा ! फटा तो मार ही डालूँगी।

मि० पी०—क्या करेगी ?

नैन—जान ले लूंगी—जान !

मि० पा०—[ दोनों हाथों से कोट पकड़ कर और ज़ोर से मरोड़ कर छीन लेती है। फिर नैन के मुँह पर उसे ज़ोर से दे मारती है ] अब मैं तुझे दिखाती हूं कि घर का मालिक कौन है ! मेरी बच्ची, ले ! ले ! [ कोट का गला फाड़ती है और उसे पैरों से रौंदती है। नैन मेज़ पकड़ लेती है। अपनी मामी को ख़ूनी आँखों से घूरती है। फिर गोश्त काटने की छुरी उठाती है। ]

नैन—[ दबी आवाज़ में ] मेरे बाबू ने यह कोट मुझे दिया था। [ रुक कर ] मेरे बाबू ने !

मि० पा०—विल ! होशियार रहना । देखना इस के हाथ में छुरी है।

पा०—[ पास जाकर ] ला बावली ! छुरी मुझे दे। ख़बरदार जो कभी ग़ुस्सा किया ! मुझे एक शिकायत तो पहले ही से थी, यह आज तुझे हो क्या गया है ?

मि० पा०—सुनना चढ़ा है—सुनना ! कमबख़्त ने मेरा हाथ ही नोच लिया होता !

नैन—[ दबी आवाज़ से ] अब बच के रहना।

मि० पा०—ठहर जा ! मैंने भी तुझे सीधा न कर दिया हो तब ही सही ।

नैन—कहे देती हूँ ! अब सम्हल के रहना !

पा०—नैन, अपने कमरे में जाओ। [ नैन ग़ुस्से में अपने फटे कोट को उठाती है और फूट फूट कर रोने लगती है। ]

नैन—अब्बा ने यह कोट मुझे दिया था......मुझे बड़ा प्यारा था! [फटे और सिमटे हुए कोट को सम्हालने की कोशिश करती है] अब यह चिथड़े चिथड़े हो गया! [मिस्टर और मिसेज़ पारजिटर दोनों उसे सख्त नफरत भरी निगाहों से देखते हैं] अब इसे पहनना मुझे नसीब न होगा। हाय, मेरे अब्बा! मैं मर क्यों न गई! मैं मर क्यों नहीं जाती!

पा०—देखो! फिर वही! ख़बरदार! जो यह बुरे शगुन मुँह से निकाले होंगे! यह मैं बिलकुल बरदाश्त नहीं कर सकता।

नैन—मामूँ जान! मैं अपने भरसक सबर कर चुकी—जी भर के कर चुकी।

पा०—मामूँ मामूँ मत करो भइया! ख़ुदा ख़ुदा करो, कि भूत सर से उतरे। और याद रक्खो,

तुमने अब तक साफ़ साफ़ मुझ से नहीं कहा है ! अगर कुछ भी कह दिया होता तो मैं दरगुज़र करता—गो कि जो कुछ मुझ पर गुज़रा मेरा दिल ही जानता है [ ठैर कर फिर बिगड़ कर ] देख ! सुन ! अब भी साफ़ साफ़ कह दे । साफ़ दिली अच्छी होती है । [ नैन सिसकियाँ भरती है ] कुछ सुना ? [ नैन हिचकियाँ लेती है ]

पा०—[ खड़े होकर ] अरी ! तुझे मुझ से कुछ कहना है या नहीं ?

नैन—नहीं मामूँ, नहीं ।

पा०—[ म,खी से ] मैं समझता था कि कुछ कहना है ।

नैन—नहीं मामूँ ! तुम से क्या कहूँ ?

पा०—[ जाते हुए ] मुझे तुझ से यह उम्मीद न थी ।

नैन—मामूँ !

पा०—मुझे यह कभी उम्मीद न थी ! [ चला जाता है ]

मि० पा०—[ उसके पास जाकर ] मैं तेरा कलेजा निकाल के छोड़ूँगी !

नैन—तुम ?—चलो ! [ मुँह फेर लेती है ] हाय अब्बा ! तुम मुझे अपने पास बुला लो । बुला लो अब्बा !

मि० पा०—[ जल कर ] ऐसे डहारोगी तो कहीं रात के लिए तुम्हारा सिंगार न बिगड़ जाये ! फिर गाँव भर के लौंडे क्यों पीछे फिरने लगें ! . . . कुत्ते कहीं के !

[ नैन सेब उठा लेती है और काटने लगती है और रोती जाती है । ]

मि० पा०—अब मुझे भी लौंडों के साथ तेरे उछाल कूदके देखने हैं। यहाँ किसे फुरसत है जो मैं इन की माँओं से रोज़ गिल्ले शिकवे सुनती फिरूँ।

नैन—[ धीमी आवाज़ से ] ख़ुदा न करे जो मुझ पर बीत रही है वह कभी तुम पर बीते!

[ जेनी आती है ]

जेनी—अम्मा!

मि० पा०—अरी! गला क्यों फाड़ती है?

जेनी—डिक सौदा लाद लाया।

मि० पा०—वक़्त से आया। देख री! [ नैन से ] जा उस से सामान ले ले।

नैन—मैं?

मि० पा०—हाँ, हाँ, तू! तू नहीं तो और कौन? इतना ढकोसती है तो कभी तो कुछ किया कर।

[ नैन जाता है ]

जेनी—अम्मा ! बाबू कुछ बोले ?

मि० पा०—बस ! दम बन्द । मैं ने सब ठीक कर दिया ।

जेनी—अरी अम्मा ! मैं तो समझी थी मेरी कम-बख्ती आ गई ।

मि० पा०—इसका रोना छोड़ो । मुझे तुम से एक और बात कहनी है । देखो यह लौंडिया नैन—

जेनी—क्या हुआ, अम्मा ?

मि० पा०—[ बड़ी जल्दी जल्दी बोलती है ] ज़रा दीदे खुले रखना । ऐसा न हो, जैसा उसने मुझे आफ़त में डाला है तुम्हें भी कहीं का न रहने दे ।

जेनी—यह क्या कह रही हो, अम्मा ?

मि० पा०—मेरा मतलब डिक गरविल से है—और क्या कह रही हूँ ?

जेनी—अरे !

मि० पा०—हाँ, हाँ, डिक गरविल से है । इस लौंडिया ने उसे उल्लू बना लिया है।

जेनी—अरे !

मि० पा० -[ मुंह चिढ़ा कर ] "अरे !" "अरे !" यही हुआ है ! डिक उस पर रीझ गया है।

जेनी—तो रीझे । मैं क्या करूँ, अम्मा ?

मि० पा०—तुम नहीं करोगी तो मैं करूँगी । यह बिलल्लापन छोड़ो ।

जेनी—डिक चाहे सो करे । मुझसे मतलब ?

मि० पा०—नहीं वह जो चाहे सो नहीं कर सकता। जो मुँह में आया बक दिया ! यह हाथ से

निकल गया तो दूसरा है कौन? यह भी तो सोचो। आदमी मौक़े का मिलता हो तो कभी हाथ से न जाने दे। इसकी इफ़रात नहीं होती। ज़रा कान खोल के सुन रख।

जेनी—इफ़रात हो न हो, मेरी बला से! मुझे इसकी ज़रूरत नहीं।

मि० पा०—फिर बकती जाती है! ज़रूरत कैसे नहीं? तुझे अच्छा लगे न लगे मैं यह नहीं सहूँगी कि गाँव भर में तुम्हारा नाम उछलता फिरे।

जेनी—अरे! इसमें यह भी आफ़त है। मुझे ध्यान भी न था!

मि० पा०—हाँ! हाँ! तुझे क्यों ध्यान होने लगा?

जेनी—सच कहती हूं, अम्मा!

मि० पा०—था तो वर इस बीबी का, रीझ गया एक चोट्टी पर!

जेन—यह चर्चा होगा, अम्मा ?

मि० पा०—भला इसकी सी लौंडिया और गरचिल को अपना ले ! अगर तुझ मे ज़रा सी भी आन हाती ता कहीं यह हो सकता था ?

जेनी—क्या सचमुच :सके डिक पे दांत है ?

मि० पा०—हैं या नहीं आप ही पता लगाओ ना।

जेनी—अब ता देखूंगी। ज़रा मैं भी देखूँगी।

मि० पा०—[ नैन को आते देख कर ] हाँ ज़रूर। मै अब और कामों में लगती हूँ। जब तक मैं आऊँ, देखो यहां सब ठीक कर रखना। [ नैन से ] तू अपने को बड़ी चीज़ समझती है। मैं भी तुझे सीधा न कर दूँ तो सही। सुन रख ! यहाँ यह तेरे चरित्तर नहीं चल सकते। न ये अपनी मइया के से करतूत [ कुछ रुक कर ] ये लौंडों में गुल-

छुरे ! कान खोल कर सुन लिया—नकटी !—
कमबख़्त कहीं की !

[ बाहर जाती है। नैन मेज़ के पास कुरसी खींचती है जहाँ जेनी पहले से बैठी है और सेब काटने लगती है। रोती जाती है। फटे कोट को बटन संभाल के सीधा करती है।

जेनी—नैन ! अम्मा की बातों का बुरा न माना करो। वह कुछ बुरे दिल से थोड़े ही कहती हैं।

नैन—मैं कहाँ बुरा मानती हूँ ?—

जेनी—शाम की दावत के मारे बौखलाई हुई हैं।

नैन—यह बात नहीं है। यह बात हरगिज़ नहीं है! . . . ये मेरे बाबू बिचारे पे ही दया कर दिया करतीं तो मैं मर पाती।

जेनी—फिर वही बातें! अब बस भी करो। मैं चूल्हे

पर से गरम पानी ला दूँ। आँखें तो देखो कैसी लाल लाल हुई जाती हैं।

नैन—हुई जाती हैं तो हो जायें। मुझे परवा नहीं।

जेनी—बस अब जाने दो। मैं आ गई हूँ। हम आपस में प्यार से रहेंगे—बड़े प्यार से। है कि नहीं? अम्मा बड़े कड़े मिज़ाज की हैं। पर तबियत की बुरी नहीं हैं।

नैन—उनकी बातें हैं कि ज़हर! सब मुझी को बुरा कहते हैं। सारा जहान मुझसे फिर गया है।

जेनी—[ पानी का लोटा और एक तौलिया लाकर ] ले ज़रा आँखें तो धो डाल। नहीं तो ला मैं धुला दूँ।

नैन—तुम ने बड़ी तकलीफ़ की। यह भी मेरा दिवानापन है। इस रोने धोने में क्या धरा है?

जेनी—देखो, आंखें कैसी लाल हुई जाती हैं। चुप भी रहो। देखो कैसे कैसे लोग अभी आते होंगे ख़ूबसूरत, ख़ूबसूरत। जवान, जवान। मैं ना जानूँ यह सब के सब तुम पर रीझ जायेंगे। तअज्जुब क्या जो तुम भी किसी पे रीझ जाओ। —आज नहीं तो दो दिन बाद सही!

नैन—मैं रीझूँगी! अखारत विचारी!

जेनी—जाने भी दो। क्या दिल पे लेती हो। हम तुम तो आपस में बहन बहन बन कर रहेंगे। क्यों? है कि नहीं?

नैन—तुम्हारी मेहरबानी है जो मुझसे प्यार से बोलती हो।

जेनी—सुनो! इतवार को घूमने चला करेंगे। भई, मैं सच कहती हूं तेरा दुख देख कर मेरा दिल दुखता है।

नैन—क्यों बहन जेनी, तुम मुहब्बत निभाओगी भी ?

जेनी—ज़रा कोई देखे ! कैसी प्यारी आँखें हैं ! बाल भी मेरे बालों से घने हैं। तुम इन्हें रखती भी ख़ूब हो। बहन, बात तो जब है कि ऐसा दिल से दिल मिल जाये कि कोई आपस में भेद न रहे—क्यों है न ?

नैन—पर दोस्ती निभाओगी भी ? यह तो बताओ जेनी ! बहन, सुन लो। बहन बन कर बैरन न बन जाना। मैं बहुत भुगत चुकी हूं। जो कहा तुम भी पलटीं तो मेरा दिल बिलकुल टूट जायगा। जब से यहाँ आई हूं कई दफ़ा तो ऐसा हुआ है कि बस अपनी जान लेते लेते रह गई—तुम्हारी अम्मा ने मुझे ऐसा कुछ सताया है !

जेनी—भई, अब ये बातें न करो।

नैन—जेनी ! सुन. मैंने क्यों अपनी जान नहीं दी।

जेनी—मैं नहीं सुनूंगी। भई, यह बात ख़तम भी करो।

नैन—जेनी, ज़रा चुप कर। बस इतना सुन ले कि मैंने अपनी जान क्यों नहीं दे दी। सुन। मैंने सोचा . . . बड़ी बेतुकी सी बात है। . . . अच्छा सुन, जेनी, एक बात बता—तू ने मरदों का कभी कुछ सोचा है। इन से मोहब्बत करने का—इन से शादी-वादी का ?

जेनी—सोचूं क्या ? यही सोचती हूँ कि मेरा अपना भी एक घर हो। यहीं की रोटियों पर सदा पड़े रहना थोड़ी चाहती हूं।

नैन—अरी यह नहीं—यह कि किसी मर्द की मदद-वदद करूं ?

जेनी—मर्द की मदद ! मर्द की क्या कोई मदद

करेगा ? मर्द औरत की मदद करे, कि औरत मर्द की ?

नैन—जेनी ! मैं तो एक मर्द की मदद कर सकती हूं !

जेनी—भई, तुम्हारी भी अजब बातें हैं !

नैन—जब किसी लड़की का दिल टूटने लगता है—जेनी, तो उसे अजब अजब बातें सूझती हैं।

जेनी—अच्छा !

नैन—सचमुच, जेनी !

जेनी—यह कहती क्या हो ?

नैन—मैं ने आज तक किसी औरत से ऐसा जी खोल कर बातें नहीं की। . . . ऐसा मालूम होता था को जी का बुख़ार न निकला तो दम घुट ही कर रह जायगा।

जेनी—यह तो होता है—मैं मानती हूं ।

नैन—तेरी सूरत, तेरा प्यार देख के मुझे यह हुआ
    कि तुझ से अपने जी का हाल खोल दूं ।

जेनी—मेरी सूरत? क्या मेरी सूरत अच्छी है, नैन?

नैन—बड़ी प्यारी !

जेनी—जहाँ मैं नौकर थी सब कहते थे कि जेनी
    की सूरत अच्छी है—सिवाय पावरचन कम-
    बख़्त के ।

नैन—ख़ूबसूरत तो तू है, जेनी !

जेनी—बावरचन ढड्ढो बड़ी बद दिमाग़ थी । काग़ज़
    की धज्जियाँ लपेट लपेट के बालों में घूंगर
    बनाती थी । भली औरतें काग़ज़ लपेट के कभी
    घूंगर नहीं बनातीं । इस की सूरत सवेरे के
    वक़्त तो बिलकुल चुड़ैल की सी मालूम होती थी ।
    . . . उफ़्फ़ो ! उस घर में इतनी चीज़ें नास

होती हैं कि कुछ कहने की बात नहीं। जब देखो पकवान चढ़े हैं। सुबह ग्यारह बजे और मालकिन दूध बिस्कुट ले बैठी।

नैन—यह तो सब सुना, पर अब ज़रा अपने भेद की बातें तो बताओ।

जेनी—मैं तो बताऊंगी ही—पर तुम भी बताओगी कि नहीं ?

नैन—पूछोगी तो क्यों नहीं बताऊंगी ?

जेनी—और जब कोई पसन्द आ जायगा तब भी मुझे बता दोगी।

नैन—अच्छा ! पसन्द आ जाने की बातें ? पहले तुम तो अपना भेद बताओ।

जेनी—भई, मैं ने तो अभी तक किसी को पसन्द नहीं किया है।

नैन—बड़ी झूठी हो, जेनी !

जेनी—सच कहती हूं। कोई ख़ास नहीं है।

नैन—तो फिर अब जल्दी से हो जायगा। जेनी प्यारी! मैं चाहती हूँ तुम सुख ही सुख भोगो।

जेनी—मोहब्बत भी ख़ूब चीज़ है। आदमी से क्या क्या नहीं करवा डालती! नैन, तू किसी मर्द से मोहब्बत कर सकती है?

नैन—क्यों नहीं ?

जेनी—मई, मुझे तो वो बड़े भद्दे गँवार से मालूम होते हैं।

नैन—सब थोड़ी।

जेनी—नैन, तुझे कोई ज़रूर पसन्द आ गया है? कौन है? बता दे, मेरी अच्छी प्यारी बहन! सच कहती हूं जो किसी से भी कहूँ। बता

दे नैन !—देखो, तुमने वादा किया था कि मुझसे कोई बात न छिपाओगी।

नैन—आहा !

जेनी—अच्छा यह बता दे कि मैं उसे जानती हूँ कि नहीं [ नैन उस के पास जाती है। अपनी बाहें उस के गले में डाल कर मुँह चूमती है ]

नैन—हाँ, जानती हो।

जेनी—आरची पियर्स है। है ना?

नैन—नहीं।

जेनी—फिर आख़िर है कौन? बताती क्यों नहीं? बड़ी शरम की बात है !

नैन—हां ! सचमुच ?

जेनी—मेरी प्यारी नैन ! मुझे बतादे। ले, कान में बता दे !

नैन—जेनी! उसका नाम डिक गारविल है।

जेनी—डिक गारविल!

नैन—मुझे वह पसन्द है—बहुत पसन्द है।

जेनी—कितना? आखिर थाह है कि अथाह?

नैन—बस इतना कि उस के नाम से मेरा दिल खिल जाता है।

जेनी—क्यों नहीं—ज़रूर खिलता होगा! [कुछ रुक कर] बहन नैन! तुम ख़ूब ही सुख भोगो। तुम भी और मिस्टर गारविल भी!

नैन—जेनी, तेरे मुंह में घी शक्कर!

जेनी—नैन बहन, तेरी आँख को क्या कहूँ! यह तूने डिक को क्या पसन्द किया? पर हाँ, तू जिसे चाहे उसके बड़े भाग!

नैन—आ जेनी, मुझे प्यार कर ले। तू ने कभी

मुझे प्यार नहीं किया !

जेनी—यह ले . . . बस अब ज़रा आँखें धो डाल नैन। नहीं तो लाली नहीं जायगी। लाल लाल डोरे देख कर डिक क्या कहेगा !

नैन—अभी रोने से जी नहीं भरा ! रोना चला आता है !

[ हलके हलके बाहर चली जाती है ]

जेनी—अम्मा ! अम्मा !!

मि० पा०—[ अंदर से ] अरी यह गला क्यों फाड़ती है।

जेनी—ज़रा यहां आना।

मि० पा०—[ हाथ पोंछती आती है ] आख़िर है क्या ?

जेनी—नैन की . .

मि० पा०—नैन की क्या ?

जेनी—[ खिल खिला कर ] अब डिक पे सचमुच रीझी हुई है। मुझे ख़ुद ही बता दिया।

मि० पा०—ओ हो !

जेनी—[ खिल खिला कर ] फिर अब तो ज़रा इन्हें देखना है, अम्मा !

मि० पा०—मैं सब समझ लूंगी।

[ परदा ]

# एक्ट २

[ सीन—रसोई। नैन चीज़ें सम्हाल रही है—थाली, गिलास, बोतल अन्दरवाली कोठरी में रखती है। ]

नैन—[ गाती है ]

> यह नसीम ठंडी ठंडी, यह हवा के सर्द झोंके
> तुझे दे रहे हैं लोरी, दिले बेक़रार सोजा।
> तेरा पहला साबिक़ा है, शबे ग़म बुरी बला है,
> कहीं मर मिटे न ज़ालिम, मेरे ग़मगुसार सो जा।

डिक—[ अन्दर आकर ] मिस नैन !

नैन—अरे !—मिस्टर गरविल ?—मैं तो डर गई ! बड़ी जल्दी आ गये आप ?

डिक—हैं ! तो और सब आख़िर कब आयेंगे ?

नैन—अभी कैसे ? अभी तो वक़्त भी नहीं हुआ।

डिक—और घरवाले—मिसेज़ फ़ारजिटर—तीने कब आवेंगी ?

नैन—अभी दस मिनट तो आतीं नहीं। अब कपड़े पहन रहे हैं।

डिक—और बाजेवाला भी नहीं आया ?

नैन—अभी कहाँ !

डिक—तो फिर मैं भी ज़रा और घूम फिर आऊं तो अच्छा है।

नैन—नहीं, नहीं, मिस्टर डिक। आओ—बैठो भी। अब आते ही होंगे। मैं भी खाली हुई जाती हूं। दुनिया की कुछ ख़बर बताओ—क्या हाल चाल है ?

डिक—ख़बर यह है कि एक क़ैदी निकल भागा है—ग्लोस्टर जेल से।

नैन—सचमुच ?

डिक—और लोगों का ख़याल है कि यहां कहीं आके छुपा है।

नैन—यह क्यों समझते हैं ?

डिक क्या जाने ! वो स्ट्रीट से एक सरकारी प्यादा आया है। एक अफ़सर भी साथ है। पादरी साहब का घर पूछ रहे थे। ढिंडोरा पिटवाना होगा। ख़ूब हो जो कमबख़्त को पकड़ें और टांग दें। मैं तो ऐसों को कुत्तों से चिथड़वा डालूं।

नैन—मिस्टर डिक ! वह बिचारे भी तो आदमी हैं—हम तुम जैसे।

डिक—[ गुलूबन्द खोलता जाता है ] नहीं—हरगिज़ नहीं। वह हम लोगों कैसे नहीं होते। बस इन्हीं बातों में तुम औरतें ग़लती करती हो। नरम दिल होती हो ना—इसीलिए। मुजरिमों को तो

फाँसी होनी ही चाहिए—तभी तो कहीं हम भले मानसों के भी दिन फिर सकते हैं। [ गुलूबन्द खोल कर अलग रख देता है। ]

नैन—अच्छा सुनो! इतना चल के आ रहे हो कुछ खाओ पिओगे?

डिक—है क्या क्या?

नैन—दो एक केक खालो। दो बूंद सेब की दारू पीलो। इसी कोठरी में अभी ताज़ी बना के रक्खी है।

डिक—तो लाओ—पर तुम्हें तकलीफ़ तो न होगी? [ नैन गिलास और प्लेट लाती है डिक एक केक उठाता है ] मुझे चाहिए कि मैं तुम्हारी ख़ातिर करूँ न कि उलटी तुम मेरी—पर क्या करूं—यहाँ मेरे पास मोहनभोग भी तो नहीं। मिस नैन, तुम सी मोहनी को सिवाय मोहनभोग के और कोई क्या खिलाये!

नैन—रहने दो बस ! न जाने कितनी लौंडियों से यही बकवास कर चुके होंगे !

डिक—कभी नहीं—एक से भी नहीं।

नैन—अच्छा। यह तो बताओ, ये केक कुछ पसन्द भी आये।

डिक—क्या कहना है ! मेवेदार केक को काट के मक्खन लगा दो—फिर ज़रा आग दिखा दो—बस इतनी कि मक्खन पिघल जाये—तेज़ न करो, बस ज़रा एक आग दिखा दो।—फिर उस पे हलकी हलकी शकर बुरका दो कि ज़रा चाशनी आजाये—मगर मीठा न होने पाये। फिर तो ये केक मूँह में ऐसे घुल जाते हैं जैसे गुलकंद—या जैसे अपनी प्यारी के चूमे—बसंत में—जब पूनो की चाँदनी छिटकी हुई हो !

नैन—अगर इन केकों में तुम्हें ऐसी करामातें दिखाई

देती है तो लो, एक और खाओ। और देखो इस घड़ी को समझ लो कि यह पूनो का चाँद चमक रहा है। [ केक लाती है ]

डिक—एक तो केक खाना !—फिर तुम्हारे हाथ से—अजब मज़ा है ! [ केक खाता है ] अरे ! इस में शक्कर तो है ही नहीं। मिस्स नैन, ज़रा अपने प्यारे प्यारे हाथ इस केक में छुआ दो—यह मीठा हो जाये !

नैन—मैं ऐसी बेतुकी बात करने से रही . . लो यह दूसरा खा के देखो—इस पे शक्कर लगी हुई है।

डिक—[ आधा काट के ] अगर यह सा आधा तुम खालो तो मैं फूले न समाऊँ। मैं यह समझूं—कि तुम— कुछ तो—

नैन—नहीं, मैं नहीं खाऊंगी। लो ! यह दो घूंट और पीलो।

डिक—[ चखकर ] मिस नैन, यह दारू तो बड़ी तेज़ है। तेज़ होती तो अच्छी है—मगर जब नाप ठीक ठीक दिया गया हो—खोण की तरह। मगर यह तो बहुत ही तेज़ है। मैं बताऊं—इसमें क्या कमी रह गई है। कुछ अध पक्के सेब। एक अधपक्की टिकिया और कुछ थोड़े जायफल ख़ूब महीन पीस के डालने थे। दर दरे नहीं—महीन—समझी?—फिर देखती जो इस में नाम को भी कड़वाहट रह जाती। ऐसी लगती जैसे एतवार का हलवा।

नैन—तुम को तो, मिस्टर डिक, कहीं का बावर्ची होना चाहिए था!

डिक—अब्बा मुझ से कहा करते थे कि बच्चा, खाना पकाना सीख रखो। अम्मा के मरने पे मैं ही तो सब पकाता था। खाने के बड़े शौक़ीन थे अब्बा।

नैन—धन्य भाग उसके जिसे अपने बाप की सेवा करने को मिले । सोचो तो—कीड़े से जब से हम होते हैं तब से वह हमें पालता है । दुनिया में हमें हरा भरा देखने के लिए न जाने अपने किन किन सुखों को मिटा देता है ।

डिक—मेरे बाप ने अपने सुख-दुख नहीं त्यागे । कहते थे कि एक दफ़ा कुछ कोशिश की थी—कुछ यों हो सी । पर इन्हें रास नहीं आई ।

नैन—लोग कहते हैं मर्द अपनी औलाद के लिए भी अपना सुख चैन नहीं छोड़ता । पर औरत को तो तजना पड़ता ही है । तुम जानो क्या ?—तुम्हें गरज़ क्या जो सोचो भी कि वह क्या क्या तज देती है ! अपना रंग रूप खो बैठती है । कल से बेकल हो जाती है । दुनिया के सुखों—दुनिया के मज़ों से हाथ धो बैठती

है। और क्यों? औलाद की ममता में। चाहे वह उसके बुढ़ापे में उसे दो रोटी से भी न पूछे!

डिक—भई, मैं तो कभी नहीं समझ पाया कि औरत औलाद पर क्यों जान देती है। जब तक औलाद नहीं होती यह कैसी गुजरिया सी होती है। गाल देखो तो लाल लाल, चिकने, मुलायम जैसे मख़मल। प्यारे प्यारे होंठ—जैसे मूँगा—जैसे गुलाब! आंखें रसीली—तारों सी चमकती हुई! और उफ़ वह गोरे गोरे गालों से हाथ!—जिन्हें छुआ नहीं कि बदन भर में बिजलियां सी कौंदने लगीं—अजब तरह की—बयान से बाहर!

नैन—यह रंग रूप जो मर्दों का मन हर ले बड़े भागों से मिलता होगा।

डिक—और बाद को मैंने इन्हां लड़कियों को देखा है।—कपड़े धोते धोते हाथ जैसे झामा, भई, सख्त —सीते सीते उंगलियां कटी छिदीं !—मुंह पे हवाइयां। गाल पिचके और ऐसे बदरंग जैसे मेंडक के पेट की खाल।—आंखें देखो तो धसी हुई, भारी, बुझी बुझी जैसे किसी बीमार भेड़ की हो जाती हैं, जब उसका वक्त आन पहुँचता है। होंठ देखो तो कटे फटे—बेरस। जोड़ जोड़ में दर्द, इधर उधर कराहती फिरती है। देख के तरस आता है ! चिथड़े लपेटे पुराने, गन्दे। बच्चे में में कर रहे हैं—क्या हुआ भाई ? नन्हें डिक की नाक में से ख़ून बह रहा है—गिर पड़ा कटहरे पर। नन्ही सायरा बिचारी फिसल पड़ी आंगन में—फूट गया सर उसका। उफ़, उफ़, भई मेरा तो दिल दुखता है।

नैन—माँ की ममता मिस्टर डिक, कुछ इतने ही तक थोड़ी है। रंग रूप मिटना—सुख चैन जाना—हँसते खेलते दिलका बुझ के रह जाना, भला किसे सुहाता है पर औलाद की ममता भी तो अजब चीज़ है। बच्चा होना! एक नन्ही सी जीती जागती मूरत का महीनों तुम्हारी छाती पे लोटते रहना। फिर उसे पालना पोसना। और उसका बेबसी से माँ का मुंह तकना—अजब चीज़ है।

डिक—असल में ये नन्हे नन्हे बच्चे होते तो बड़े प्यारे हैं। पर जब इन्हें कोई ज़रा साफ़ सुथरा रक्खे। इनका भजन गाना मुझे बड़ा अच्छा लगता है। इन्हें नदी में तैरते देखो तो बड़ा मज़ा आता है।—ऐसे चिट्टे चिट्टे—ऐसे फुर-तीले!—कभी बदन मलते हैं—कभी छींटें उड़ाते हैं—झल झल चमकते हैं—जैसे हीरे। . . .

मिस नैन हम लोगों के सिवा आज रात को और कौन कौन आ रहे हैं।

नैन—बाजा बजाने जैफ़र पियर्स आ रहा है।

डिक—यह तो पागलखाने भेज दिया जाये तो अच्छा है। बुड्भस लगी है कमबख़्त को। लोग तो सब ही कहते हैं कि सठिया गया है। पर—

नैन—बाजा तो ऐसा बजाता है कि कुछ कहने की बात नहीं।

डिक—बड़े ग़ज़ब का! इस में तो बूढ़ा ग़ज़ब ही करता है।

नैन—और भी सितम तो वह जब करता है जब उसकी पुरानी हूक जाग उठती है और उसे अपनी प्यारी का ध्यान बन्ध जाता है। वह उसे अब तक लौंडिया ही कहता है। और उसे मरे

पचास बरस हो चुके होंगे—पचास से भी ऊपर—

डिक—बड़ी ख़ूबसूरत थी। लोग उसे पच्छिम का सितारा कहते थे। चेहरा जैसे चमेली का फूल। अच्छा उस का चर्चा करते हैं।

नैन—जैफ़र ने उस पे बहुत से गीत बनाए हैं। उन्हें गाता भी है। मैंने उसे एक दफ़ा अपना गीत आप गाते सुना है। गाने के साथ साथ बाजा बराबर बजाता रहा। धीमे धीमे—मौत के स्वरों में—आंखों में आंसू डब डबाये हुए। जब से वह बिचारी दुनिया से उठ गई इसकी कल कुछ ऐसी बिगड़ी कि फिर न सम्हल सका।

डिक—जैफ़र के सिवा और कौन कौन आयेगा?

नैन—टौमी और आरटी। आरटी भी बड़ा हो के कैसा ख़ूबसूरत निकला है।

डिक—निकला होगा। लोग कहते तो हैं। मुझे तो कभी उस में कुछ दिखाई-विखाई नहीं दिया।

नैन—बिल्कुल अपनी मां पे गया है। काले काले बाल, नाक नकशा तसवीर सा!

डिक—मुझे या तो बिल्कुल काले बाल अच्छे लगते हैं या बिल्कुल भूरे। या कुछ सुनहरापन लिये। बिल्कुल काले बाल भी अच्छे होते हैं। मगर इन में कुछ चमकदार होते हैं—कुछ बिल्कुल बेचमक।—जानती हो मुझे इन दोनों में से कौन सा रंग अच्छा लगता है?—बस यही जो तुम्हारे बालों का है। ख़ूबसूरत इस का नाम है!

नैन—[ उठ कर ] मिस्टर डिक, अगर तुम दारू पी चुके तो मैं यह गिलास हटा दूं। . . . मिस्टर डिक? . . .

डिक—क्यों ?

नैन—सुनो।—सात आठ दिन हुए हमारी एक भेड़ी मर गई थी। उसे वाघी हुई थी। देखो तुम क़ीमें के समोसे मत छूना।

डिक—अरे। अच्छा, खैर देखो तुम मुझे गोड़ियों का दोहरा हिस्सा दे देना। मैं कच्ची भी मज़े से खा लेता हूँ। पर नैन क्या असल में बड़ी धूम धाम की दावत है ?

नैन—और नहीं तो क्या। देखना, नाचते नाचते सवेरा न कर दें तो सही। चाँद भी फीका पड़ जाये।

डिक—नैन ! नाचने में तो तुम शहज़ादियों को मात कर देती होगी ?

नैन—कहाँ मिस्टर डिक। साल भर से ऊपर हुआ यहाँ कौन नाचा-वाचा है।

डिक—अपने घर पे तो तुम ख़ूब नाचती होगी।

नैन—वहां तो हमारे दरवाज़े पे ही नाच हुआ करता था! एक बुड्ढा बाजा बजाता था। हूर चाँदनी रात में हम नाचते थे। जूते पहन पहन कर। सब लड़कियाँ जूते पहन पहन कर नाचती थीं। इनके पाँव खट खट बोलते थे।—ऐसी मीठी आवाज़!—सुनो तो मालूम हो जैसे ढोलकियां बज रही हों।

डिक—क्या कहूँ नैन, मैं वहां होता तो जी भर के तुम्हारे साथ नाचता।

नैन—और बहुत बहुत तरह के गाने गाते थे। लाव-नियाँ—चैतियां—कजरियां—पुराने पुराने गीत। साथ साथ झींगरों की झनकार हवा में गूंजती थी। . . कभी कोई ग्वाला आ निकलता था।—बांसरी बजाता हुआ—ऐसी मीठी कि क्या कहूँ! . . . वह दिन भी अजब दिन थे।

डिक—जब से तुम यहाँ आई हो, यहाँ भी तो बड़ी चहल पहल हो गई है। लेकिन घर छोड़ने का रंज तो हमेशा होना ही है। पर अब तो तुम जल्दी लौट जानेवाली होगी। तुम्हारे मां बाप का ध्यान तुम्हीं में लगा होगा—और लगा रहने की बात ही है!

नैन—मेरे मां बाप कहाँ! मिस्टर डिक, वो तो कभी के मर चुके!

डिक—अरे! मर चुके हैं? मिसेज़ पारजिटर तो ऐसी बातें करती हैं जैसे तुम्हारे घरवाले सब मौजूद हैं।

नैन—मिसेज़ पारजिटर ना!—हाँ वो तो चाहती हैं कि लोग यही समझें!

डिक—क्यों? यह क्यों?

नैन—बताऊंगी। किसी दिन यह भी तुम्हें बता

दूंगी। पर लाओ अपना कोट टोपी दे दो—अंदर रख आऊं। [ कोट टोपी वगैरा ले जाकर कोठरी में रख देती है। फिर लौट आती है। ]

डिक—मिस नैन, आज तो तुम ग़ज़ब ढा रही हो।

नैन—हाँ, लोग कहते तो हैं कि पानी सावन में बड़ी करामात है!

डिक— ज़रा कोई देखे! गुलाब के फूलों जैसी—कमल की पंखड़ियों जैसी हो रही हो!

नैन—मिस्टर डिक, आज तो तुम बड़ी मीठी मीठी बातें कर रहे हो -बिलकुल दरबारियों जैसी!

डिक—हाय! [ एक गुलाब का फूल निकाल कर ] मिस नैन?

नैन—कहो।

डिक—मैं एक फूल लाया था ?

नैन—जेनी के लिए मिस्टर डिक !

डिक—नहीं तेरे लिए। नैन तू इसे लगायेगी ?

नैन—दोगे तो क्यों नहीं लगाऊंगी ?

डिक—तो ले—अब शुक्रिया भी तो अदा कर।

नैन—बड़ी मेहरबानी, मिस्टर डिक !—कितना प्यारा फूल है !

डिक—लाखों में एक। लाल लाल—जैसे प्रेम। प्रेम भी तो लाल होता है। खून जैसा—जैसे लाल गुलाब।

नैन—ओहो !

डिक—यह गुलाब मेरी आँखों के सामने बढ़ा—खिला—मिस नैन ! और मैं—मैं यही सोचता था कि यह कैसा खिले अगर—अगर तुम कहीं इसे पहन लो।

नैन—तो फिर अब कुछ खिला कि नहीं ?

डिक—खिलना कैसा, मिस नैन, तुमने इसे शर्मा दिया। . . . . मिस नैन—?

नैन—क्यों ?

डिक—एक बात कहूं मानोगी ?

नैन—पहले बात बताओ।

डिक—इस गुलाब को अपने बालों में सजा लो।

नैन—बालों में ? यह क्यों मिस्टर डिक ?

डिक—मैंने तुम्हें एक दिन सुपने में बालों में गुलाब सजाये देखा था।

नैन—[ फूल बालों में लगाकर ] पुराने वक्तों की औरतें फूल बालों ही में सजाती थीं। नाचती भी थीं फूल बालों में सजाकर। इनकी पंखड़ियाँ टूट टूट कर उन पर गिरती थीं—और इधर उधर

बिखर जाती थीं। यह सब अम्मा मुझे सुनाया करती थी!

डिक—ऐसा मालूम होता है जैसे यह गुलाब तुम्हारे बालों ही में फूला हो।

नैन—अब लम्प बाल देना चाहिए।

डिक—नहीं। अभी नहीं। रहने भी दो।

नैन—[ दियासलाई जला कर ] अगले वक़्तों की औरतें भी बड़े ग़ज़ब की ख़ूबसूरत होती होंगी! उन पे कैसे कैसे गीत बने हैं। रंग रूप भी, मिस्टर डिक, एक अजब चीज़ है!

डिक—बड़े ही ग़ज़ब की—ख़ास कर औरत में!

नैन—औरत तो, मिस्टर डिक, पुजती है इसी से।

डिक—तुम भी ग़ज़ब की ख़ूबसूरत हो नैन! ग़ज़ब की!

नैन—आह ! मिस्टर डिक ।

डिक—तुम हो ख़ूबसूरत—परी की माँ ! जैसे गुलाब—जैसा मैंने तुम्हें सुपने में देखा था !

नैन—हाय ! मेरा हाथ छोड़ दो । मेरा हाथ तो छोड़ो ।

डिक—तुम हो ख़ूबसूरत । ये आँखें तुम्हारी—ये मुखड़ा तुम्हारा—जैसे चम्पा ! यह लम्बे काले बाल । उन में 'यह फूल' ओ नैन तू है ख़ूबसूरत । तू ग़ज़ब की ख़ूबसूरत है ।

नैन—हाय । यह न करो ! यह न करो !

डिक—मेरे दिल ! मेरी जान !

नैन—हाय !

डिक—नैन, मैं तुझ पर मरता हूं ! मै तुझ पर जान देता हूँ !

नैन—अब मुझे छोड़ दो ! भई, अब मुझे छोड़ तो दो !

डिक—नैन, तुझे भी मेरा प्यार है ?—तू भी मुझे चाहती है ?

नैन—तुम क्या जानो ! तुम नहीं जानते हो । तुम मेरे जी का हाल क्या जानो ?

डिक—नैन, मैं तुझ पे जान देता हूं ।

नैन—हाय ! नहीं—नही—यह मत करना ! मुझ से मोहब्बत मत करना ।

डिक—दुनिया भर में तुझ सी ख़ूबसूरत ढूंढे नहीं मिल सकती । तू औरतों का नाज है !

नैन—हाय—मुझे छोड़ दो ।

डिक—मेरी प्यारी ! मेरी जान !

नैन—हाय, डिक !

डिक—नैन ! मेरी नैन, बता दे—तू मुझे चाहती है?

नैन—हाय ।

डिक—मेरी प्यारी ! शादी करेगी मुझसे ? मुझे चाहती है ना?

नैन—डिक, मैं तुम पर जान देती हूं !

डिक—मेरा दिल ! मेरी जान !

नैन—मेरे प्यारे ! मेरे मोहन !

डिक—मेरे चाँद के टुकड़े—मैं तुझ पर गीत बनाऊंगा । मेरी मोहनी !

नैन—तुम मुझे चाहते हो—इस से सुहावना गीत और क्या होगा ?

डिक—नैन प्यारी ! मुझे अपने बाल खोल देने दे । मैं इन्हें बिखरे देखूं . . हाय ! यह बाल . . अरी नैन ! तू है ग़ज़ब की ख़ूबसूरत !

नैन—हाय ! मैं कहीं .खूबसूरत होती !

डिक—मेरी नैन ! तू है .खूबसूरत।

नैन—तो और ज़्यादा होती—जिस में तुम्हें और भी सुख मिलता !

डिक—मुझे प्यार कर ले। ज़ोर से प्यार करले . .

नैन—देखो डिक इन्हीं बालों को कहते थे—यह कौन से ऐसे हैं।

डिक—[ बालों को चूमके ] हाय ! ग़ज़ब के हैं—मेरी प्यारी, बड़े ग़ज़ब के हैं।

नैन—मेरे प्यारे, अब मैं तेरी हूं।

डिक—बता हमारी शादी कब होगी। तू बिलकुल मेरी कब हो जायेगी।

नैन—हाय मेरे प्यारे ! अब बस करो—बस करो।

डिक—पर शादी कब होगी ?

नैन—मुझे प्यार कर लो।

डिक—बसन्त ठीक है ?

नैन—ज़ोर से और ज़ोर से।

डिक—मेरी चाँद। मेरी रानी।

नैन—प्यारे ! लो बस अब मुझे छोड़ दो। [ अलग हो जाते है ] मैं ने जी भर के सुख भोग लिया। बस अब मुझे कुछ नहीं चाहिए।

डिक—यह क्या ? नैन, यह क्या ?

नैन—डिक, मैं तुम से शादी नहीं कर सकती। अब जाओ—अब यहाँ से चले जाओ। [ वह उसकी तरफ़ को बढ़ता है ] देखो, यह मत करो। हमारी शादी कभी नहीं हो सकती। तुम नहीं जानते। जानोगे तो मुझसे घिन करने लगोगे। मैं अपने मूंह से नहीं बता सकती। मेरे प्यारे, आज रात को नहीं। सब आते ही होंगे।

. . डिक जो मैं तुम से शादी करलूं—पर, हाय ! नहीं कर सकती, हरगिज़ नहीं कर सकती—अगर करलूं—तुम्हारे साथ रहूँ—तो मेरे लिए तुम बदनाम हो जाओगे। लोग तुम्हें नाम धरेंगे—इस से छिप नहीं सकता—जान जायँगे—ज़रूर जान जायँगे।

डिक—मेरी मोहनी ! मेरी नैन ! अपने डिक को बतादे।

नैन—हाय ! नहीं, नहीं, अलग रहो। मुझे मत छुओ। तुम अभी जानते नहीं। मैं अभागिनी हूँ। तुम से शादी के लायक़ नहीं। . डिक, मेरे बाबू—मेरे बिचारे बाबू [ रोने लगती है ] हाय डिक ! हाय डिक ! तुम क्या जानो—मुझपे क्या क्या बीत चुका है। मालूम होता है कि जैसे मेरा कलेजा फट जायेगा

डिक—यह क्या ? यह क्या, नैन ? अपने डिक को बता दे। मेरी भोली बिचारी—मेरी लाडली ! अब तो तू मेरी हो ही चुकी, नैन।

नैन—जो तुम मुझे सचमुच चाहते हो डिक—हाय मेरे प्यारे !—और हम तुम एक हो जायें, तो फिर दुनिया कुछ नहीं कर सकती। लोग बका करें ! हम देस छोड़ दें—परदेस चले जायें। वहां .खुश रहेंगे। हाय डिक ! मुझे यहां से निकाल ले चलो। हमारे पास है क्या, डिक—बस दो जानें हैं। आपस में प्यार है तो फिर और हमें चाहिये ही क्या—और प्यार की हमें कमी पड़ नहीं सकती। डिक, मेरे प्यारे डिक ! मुझे इस सब से बचाले।

डिक—मेरी प्यारी मैं तुझे अपनाऊँगा। अभी, अभी आज ही रात को—इन सब से कह दूंगा।

नैन—चाहे कुछ भी हो जाये ? चाहे मैं तुम्हें बता भी दूं—जो मुझे तुम से कहना है ?

डिक—वह कुछ भी हो—अब तो बस आज ही रात को। आज ही। बाजे वाले के आते ही।

नैन—हाय मेरे प्यारे !

डिक—मैं सब के सामने तुम्हें अपनाऊंगा। एक एक के सामने।

नैन—मुझे अपनालोगे !

डिक—मुझे फिर से प्यार कर ले।—मेरी प्यारी।

नैन—ज़ल्दी से—लोग आते होंगे।

[ दरवाज़े के बाहर कुछ पैरों की आहट और कुछ हलके हलके हंसने की आवाज़ आती है। ]

आवाज़—अन्दर हैं यह लोग आवाज़ आ रही है।

आवाज़— . . . कहीं भी नहीं।

आवाज़—आरही हैं . . . आवाज़। खबर-
दार—[ सब मिलकर जल्दी से ]

आवाज़—चुप . . हिश !

आवाज़—सब मिल कर ।

आवाज़—नहीं एक के बाद एक ।

डिक—आ गये सब।

नैन—मेरा दिल ! मेरी जान !

आवाज़े - [ गाना ]

महाराजा किवड़िया खोलो

रस की बूंदे पड़ें ।

मोरे राजा दुवंजवा खोलो

रस की बूंदे पड़ें ।

[ चुप हो जाते हैं और हंसने की आवाज़ें आती है ]

आवाज़—नहीं हैं अन्दर।

[ एक हसी गाने की लै में गुनगुनाता है ]

डिक—आज ही रात को . . इन सब के सामने। बाजा शुरू होते ही . मेरी बीबी !

नैन—मेरे स्वामी !

आवाज़ें—[ गाना ]

माहे मैयां मिलन की आस

दर्वजवा ठाड़ी रहो ।

धाऐं धाऐं धाऐं

[ दर्वाज़ा पीटते हैं। डिक और नैन अलग हो जाते है। मिसेज़ पारजिटर और जेनी जल्दी जल्दी नीचे आते हैं। वैसे ही नैन दर्वाज़ा खोलती है । बूढ़ा जैफ़र पियर्स—आरटी पियर्स—टौमी आरकर और दो लड़कियां अन्दर आती है। ]

मि० पा०—आओ । मेरा दिल तो तुम सब को देख के निहाल हो जाता है।

[ लड़कियों को प्यार करती है। और नैन की तरफ़ घूरती है। ]

जेनी [ डिक से ] क्यों। मिस्टर गरविल, गुलाब का फूल लाये? कुछ याद है क्या वादा किया था?

डिक—तुम गुलाब-वुलाब क्या करोगी?

जेनी—ठीक है! इनसानियत इसी को कहते हैं, मिस्टर डिक!

डिक—ज़रा अपने गाल तो देखो! यह किन गुलाबों से कम हैं?

मि० पा०—जैफ़र अच्छे तो रहे?

[ सब एक दूसरे को सलाम बन्दिगी करते हैं ]

आरटी—दादा ऐसे नहीं सुनते जब तक इनके कानों में न चीख़ो। [ कान में चीख़ता है ] दादा अच्छे तो हो?

जैफ़र—[ नैन की तरफ़ देख कर ] दो बार इसे देखा है—दो बार ! . . रास्ता चलते—कहीं जा रही थी । बाल खुले । उनमें फूल सजा हुआ । आंखें तारों सी चमकती हुई । . . दो बार . . अपरैल में ।

आरटी—दादा आओ ! इधर को—यहां बैठ जाओ . . हमारे दादा बाजा तो ख़ूब बजा लेते हैं । पर बात चीत नहीं कर सकते—ख़ास कर नये लोगों में ।

एक लड़की—आज गांव में दो तीन नई सूरतें दिखाई दीं—मिसज़ पारजिटर सुना तुमने ?

मि० पा०—सच मुच बच्ची ?

टौमी—और तुम्हारा ही घर पूंछ रहे थे । पादरी साहब भी उनके साथ थे ।

आरटी—मिसेज़ पारजिटर ख़ैर तो है? कहीं डाका-वाका तो नहीं डाल आईं?

मि० पा०—डाका! नहीं भईया। भला बिना चुराए ही चोर उचक्कों से छुटकारा मिल जाये तो मैं जानूं भर पाया।

आरटी—यह सब तुम जानो—पर इन में एक सरकारी सिपाही ज़रूर है।

डिक—है तो बेशक। मुझे भी मिले थे।

मि० पा०—हैं! तो डिक भईया तुम इन सब के साथ साथ नहीं आये थे क्या?

डिक—नहीं। पर वह मिले मुझे भी थे।

सब—क्या जाने क्यों आये हैं।

मि० पा०—घबराहट क्या है? यहां आते हैं तो आपही हाल खुल जायेगा। पर यह है

—गांव के चोर गांव वाले आप नहीं पकड़ सकते क्या ?

[ बूढ़ा पारजिटर नीचे उतर के वास्कट के बटन लगाता अन्दर आता है ]

पा०—आहा ! आहा !

सब—मिस्टर पारजिटर ! अच्छे तो हैं आप ?

पा०—[ सलाम करके ] लड़कियों, आज तो तुम बड़ी अच्छी लग रही हो !......अरे डिक ! तुम तो बिल्कुल दूल्हा बने हुए हो !......क्यों जैफ़र, तुम भी यार बड़े पुराने पापी हो—कहो बाजा-बाजा भी लाये हो ?

जैफ़र—[ अब तक नैन की तरफ़ घूर रहा है ] यह है कौन ? सड़कों पर, यह चमकती सूरत मैंने देखी है। फूल बरसाती जाती थी—फूल !

जेनी—[ जैफ़र पर नज़र डालकर ] तो डिक, तुम यहाँ पहले ही से आये हुए थे . . अरे! नैन! कुछ होश भी है! बाल बाँधना भी भूल गई। . अम्मा ज़रा नैन के बाल तो देखो!

मि० पा०—बच्ची,—खुदा तुझे समझे—यह फूल बालों में क्यों सजाया है!—और यह बाल बिखेरे यहाँ क्यों आन खड़ी हुई?

नैन—दर्वाज़ा खोलने आई थी। और दिया भी तो बालना था।

जैफ़र—एक प्याला लाल लाल शराब का मुझे दे दो। और एक प्याला सफ़ेद शराब का—और थोड़ा शहद [ नैन के पास आकर ] और एक सेब . . और एक . . मैं ख़ुशी का राग अब बजाऊँगा! मैं इस दुल्हन का सुहाग अब गाऊँगा!

आरटी—तुम्हारा क्या कहना है! न जाने क्या क्या कमाल करोगे। बैठ भी जाओ बूढ़े मियाँ— यहाँ कोई दुल्हन-वुल्हन नहीं है।

पा०—[ लड़कियों से ] कौन कहता है नहीं है। यहाँ तो हम सब के लिए दुल्हनें मौजूद हैं। जहाँ तुम सी प्यारी, प्यारी लौंडियें हों वहाँ दुल्हनों की क्या कमी। पर सुनो अब तुम यह अपने कोट-वोट उतारोगी कि नहीं?

आरटी—हम बिचारों को भूल ही गये क्या?

पा०—भूला नहीं। मर्द, मर्द—औरतें, औरतें। बारी बारी से—जैसे भेड़ियां खाई में से निकलती हैं—एक के पीछे एक। लड़कियो, तुम तो नैन और जेनी के साथ ऊपर चली जाओ।

नैन—एलेन, आओ।

जेनी—लाओ तुम अपना कोट मुझे दे दो।

[ लड़कियाँ ऊपर जाती हैं ]

पा०—लड़को ! आओ तुम मेरे साथ इस दूसरे कमरे में आओ। [ इन सबको दूसरे कमरे में ले जाता है ]

मि० पा०—[ डिक को साथ जाते देख के ] डिक भइया ! ज़रा सुनो।

डिक—क्यों मिसेज़ पारजिटर—क्या है ?

मि० पा०—तुम तो अपनी चीज़ें पहले ही उतार चुके हो। आओ ज़रा मेरी मदद तो कर दो—कैसा अच्छा बच्चा है !

डिक—ज़रूर मिसेज़ पारजिटर—बोलो, क्या करना है ?

मि० पा०—इस कमरे को नाचने के लिए ठीक करना है। लाओ पहले इन लम्पों की बत्तियें ठीक कर दें . . . ऐसे . . . अब लाओ

मेज़ इधर को रख दें . . ऐसे . . आज तो तुम यहाँ ज़रा जल्दी आ गये थे—क्यों ?

डिक—बस दो एक मिनट . . हाँ, तो अब यह कुरसियाँ किधर को रखी जायगी ?

मि० पा०—यह सब ठीक है—क्यों तो तुम्हें नैन ने अन्दर बुला लिया होगा ?

डिक—हाँ—उन्हीं ने बुला लिया था।

मि० पा०—सुनो ! तुम दोनों ने जो खेल खेले मुझे सब ख़बर है।

डिक—यह ख़ूब—

मि० पा०—मुकरते क्यों हो ? उसने तुम्हें प्यार नहीं किया—क्यों ?

डिक—( बिगड़ कर ) तो आप को क्या ?

मि० पा०—यह तो ठीक है। मुझे क्या—पर मैं

ने धूप में बाल सुफ़ेद नहीं किये। मेरे भी आंखें हैं!

डिक—होंगी—तो मैं क्या करूँ? पर इन से आप को फ़ायदा तो कुछ है नहीं-

मि० पा०—लौंडे, मुझे क्या चलाता है? जब किसी लौंडिया का मुंह तमतमाया हुआ—बाल कमर तक बिखरे—उनमें गुलाब सजा हुआ हो—और साथ में हो एक लौंडा—मस्त—आंखें चढ़ी हुई—जैसे तेरी हैं—तो क्या मैं समझ नहीं सकती कि—

डिक—क्या समझ सकती हो?

मि० पा०—यह समझ सकती हूँ कि ऐसी सूरतें आप से आप नहीं बन जातीं।

डिक—[ बिगड़ कर ] तो समझे जाओ!

मि० पा०—बुरा क्यों मानता है। मैं तुझे कुछ थेब थोड़ी लगा रही हूं!

डिक—इस में क्या शक—नाम को नहीं!

मि० पा०—जवानी दिवानी तो होती ही है!—मैं जानती नहीं हूं क्या? पर फिर भी—

डिक—फिर भी क्या?

मि० पा०—कुछ नहीं। जाने दो—हुआ!

डिक—मालूम तो हो क्या कहना चाहती थी?

मि० पा०—नहीं, कुछ नहीं।

डिक—कुछ ज़रूर कह रही थीं।

मि० पा०—नहीं, कहती क्या? पर मेरा माथा ज़रूर ठनकता है। जानते तो हो—तुम्हारे अब्बा अपनी लकीर के कैसे फ़क़ीर हैं!

डिक—हैं—तो फिर क्या हुआ?

मि० पा०—तुम्हारे अब्बा ने तुम्हें अपने कारबार में ले लिया था नहीं?

डिक—अभी नहीं।

मि० पा०—यह तो मैं जानती हूं। एक बात और जानती हूं—बता दूं तो अभी भौंचक्का से रह जाओ।

डिक—वह क्या बात है?

मि० पा०—कुछ मुझ से उन्होंने ज़िक्र किया था। —पर भइया मैं लगाई-बुझाई से दूर भागती हूं।

डिक—मेरे कारबार में लेने की बात थी क्या?

मि० पा०—उन्होंने कहा तो था मुझ से चुपके से। —पर मुझ में तुझ में क्या चुपका?—था कुछ है?

डिक—बिल्कुल नहीं। मैं तो—

मि० पा०—सुन, सुन, तेरे अब्बा मुझ से बोले,—कहने लगे मिसेज़ पारजिटर अब मैं कब्र में

पाँव लटकाये बैठा हूं। मैं चाहता हूं मेरे लड़के का कहीं ठीक ठौर हो जाये। बस इसने शादी की और मैं ने इसे अपने कारबार में ले लिया। और घर-बार ठीक करने के लिए दो ढाई सौ रूपये इसे दे दूंगा।

ह—क्या समझ की बात कही! क्यों न हो!—पुराने चावल हैं ना! मसल है—अन्धा क्या मांगे दो आँखें।

पा०—मैं ने उनसे कहा यह ठीक है। कोई भी माँ अपनी लड़की के लिए और क्या चाहेगी? [ आवाज़ बदल कर ] यह लौंडिया तो, डिक, तेरे पीछे दिवानी है। जब से यहाँ से अलग हुई—छुई मुई सी मुर्झा के रह गई। तू क्या जाने कि इसका कैसा बुरा हाल है! मैं तो रोज़ देखती रहती हूं। तू जो कहीं देख पाता तो बस ब्याहते ही बन

आली—या तो फिर उसे बुला भुला के मार ही डालता। क्यों—कभी तू ने इससे साफ़ साफ़ बात की है?

डिक—हां। आज ही की है। अभी अभी। एक मिनट हुआ होगा।

मि० पा०—जब यहां दर्वाज़े पर खड़ी थी?

डिक—नहीं जब मैं भीतर आया था।

मि० पा०—तो उसने जाने क्या जवाब दिया होगा? तू मुझे काहे को बताने लगा—क्यों?

डिक—मैं तो समझा आप सब देख चुकी हैं? आप की बातों से तो यही मालूम होता था।

मि० पा०—कहीं भी नहीं। मैं ने कहां देखा।

डिक—'बाल खुले हुये'। 'गुलाब सजा हुआ'—जाने क्या क्या कुछ तो आप कह रहीं थीं?

मि० पा०—बाल खुले हुये ? उसके बाल तो खुले नहीं थे। मैं ने तो ख़ुद ही पारे थे।

डिक—खुले तो थे। अभी अभी तो आप ख़ुद ही कह रही थीं।

मि० पा०—जेनी के बाल ?

डिक—नहीं नैन के।

मि० पा०—नैन ! नैन का इस में क्या बीच है ?

डिक—मैं ने, मिसेज़ पारजिटर, अभी उससे पूछा था कि वह मुझ से शादी करेगी। वह राज़ी हो गई। [ कुछ रुक कर ] अब कारबार भी मिल जायगा। बड़ा मज़ा रहेगा—क्यों है ना ? कभी शाम को ज़रा गाड़ी-वाड़ी भी मिल जाया करेगी। . . रुपया जो मिलेगा उससे—

मि० पा०—[ नाक भौं चढ़ा कर ] तुम्हें कारबार मिलेगा—ख़ाक थोड़ी ! जो जेनी को ब्याहो, तो

कारबार पाओ—यह तुम्हारे अब्बा तै कर चुके हैं। यही उन्होंने दिल में ठानी हुई है।

डिक—अब्बा तै कर चुके हैं ?

मि० पा०—कहते थे कि शादी उसे मेरी पसन्द में करनी पड़ेगी—इतना वह समझ रखे। और जो वह अपना भला बुरा आप नहीं समझ सकता तो चलता फिरता नज़र आवे· मांगे भीक दर दर !

डिक—भीक मांगे दर दर !

मि० पा०—'एक छदाम तो मुझ से पायेगा नहीं'। यह इन्हीं के लफ्ज़ हैं—अब बोलो ?

डिक—अब बोलूं !

[ मिसेज़ पारजीटर उसका रंग देखती है ]

मि० पा०—तो तू क्या समझता था कि जेनी को दुनिया जहान में बदनाम भी करेगा—और

फिर ऐसे निकाल फेंकेगा जैसे दूध में से मक्खी !—जैसे वह कोई निगोड़ी नाठी हो ।

डिक—किसी लौंडिया को दो एक दफ़ा प्यार-व्यार कर लेना एक बात है—शादी करना दूसरी बात होती है ।

[ पारजीटर अन्दर आता है । डिक को ग़ौर से देखता है । वो बिलकुल पीला पड़ा हुआ है । चूल्हे की तरफ़ से जाता है । और वहां से पेचकश उठा कर हलके हलके डिक को घूरता हुआ बाहर चला जाता है—बोलता कुछ नहीं ]

मि० पा०—अब बोलो ?

डिक—( ज़बान होंटों पर फेर के ) बोलूं क्या—अब्बा मेरी कुछ सुनेहींगे नहीं क्या !

मि० पा०—क्या कहोगे उनसे ?

डिक—माफ़ कह दूँगा कि जेनी तो मेरे लिये

ऐसी है जैसे मिट्टी—जैसे गोबर . . . कह दूँगा मैं नैन को दिल से चाहता हूँ। उससे शादी करने को तैयार हूँ।

मि० पा०—[ हलके हलके और गुस्से से ] तुम उनसे यह भी तो कहोगे ना—अपने अब्बा को यह भी बताओगे ना कि तुम उस लौंडिया से शादी करना चाहते हो जिस के बाप को अभी गलोस्टर जेल में फाँसी हुई है—इस लिये कि वह चोट्टा था। बहुत दिन नहीं हुये—अभी इसी बड़े दिन के पहले की बात है।

डिक—क्या ! नैन के बाप को ?

मि० पा०—[ सर हिलाती है ]—और इस की अम्मा को रोज़ मर्दुए घेरे रहते थे। [ ठैर कर ] . . . क्यों यह सब भी अपने अब्बा से कहोगे कि नहीं ?

डिक—तोबा ! तोबा ! ऐम्मा की लड़की है ?

मि० पा०—दोनों एक से एक बढ़के !

डिक—ख़ुदा की पनाह ?

मि० पा०—'निकल गया दिल सीने से ज्यों एनजिन भागे सरपट' !

डिक—हाँ—यह बात है—तो इर्मा से शादी करूंगा—और कुछ नहीं तो तुम्हें जलाने को ही सही ।

मि० पा०—शादी किस बिरते पे करोगे भइया ? न टका तुम्हारे पास—न फ़िन्जी कौड़ी उन बीबी के पास [ कुछ रुक के ] ताज्जुब है उसने अपने बाप की फांसी का हाल तुम से छुपाया ! जानता सारा जहान है । ढंडोरा पिटा था । जेल के सामने भीड़ की भीड़ गांव वाले इकट्ठे किये गये थे । बड़ा

नहलका मचा था—पर इन्होंने तुम से कुछ भी नहीं कहा ?

डिक—कहा तो नहीं पर चाहती थी कि बतादे।

. ग़ज़ब रे ग़ज़ब ! .　　हाय ग़ज़ब !

मि० पा०—सोचती होगी कि पहले ख़ूब फ़ांस लूं तो बताऊं। . . यह देखो—यह अन्दर क्या उधम मच रहा है।

[ अन्दर से हसने की आवाज आती है। और कोई मुर्ग़ की बोली बोलता है ]

ग़ज़ब की चलती पुरज़ा है . . जितनी ज़मीन के ऊपर है कमबख़्त उतनी ही नीचे है।

डिक—चुप शैतान की ख़ाला—ढड्डो, ख़ूसट कहीं की ! . मार तो डाला—अब चाहती क्या है ?

मि० पा०—सुनो—सुनो। आदमी बनो।

डिक—मिसेज़ पार्जिटर—मैं कहता हूँ . मेरा . . मिसेज़ पार्जिटर . .

मि० पा०—कहो—कहो—कहना क्या चाहते थे।

डिक—कहूँ क्या—कुछ समझ में ही नहीं आता।

मि० पा०—तुम्हारे अब्बा की समझ में तो आवेगा?

डिक—कौन जाने आवेगा या नहीं। पर मेरे पास अगर कुछ भी सहारा होता—

मि० पा०—तो इस में क्या है। भूखा मरना चाहते हो तो मरो! उठाओ बधना बोरिया—फिरो टुकड़ गदों की तरह ठोकरें खाते।

डिक०—अरे!—ठोकरें खाऊँ!—टुकड़गदों की तरह! . . गज़ब रे गज़ब!!

मि० पा०—टुकड़गदों का भी कोई कोल है। जिधर देखो झक मारते फिरते हैं—गन्दे—दलिद्दर—

सलीथड़े लथेड़ने—आधा पैर भीतर आधा बाहर ! कहीं बैठे मोहरियों में से गिरे पड़े टुकड़े बटोर रहे हैं। कहीं बैठे ग्वाई को झाड़ियों में से सड़ी गली झड़बेरीयाँ चुन रहे हैं। कहीं देखो तो झाड़ियों के नीचे पड़े ऐंठ रहे हैं रात को पाला मार गया—पड़े हैं ठिठरे ! . . . हज़ारों हैं हज़ारों ! उन में तुम भी एक सही।

डिक—उफ़ ! उफ़ ! मैं बाज़ आया—चुप रहो बस !

[ खमोशी ]

मि० पा०—भईया डिक तो फिर अब सोच क्या है ? जेनी मंज़ूर है ?

डिक—जाये ऐसी की तैसी में !—सही—वही सही। जेनी ही सही। है तो कमबख़्त ऐसी जैसे ठन्डी ठन्डी पुलटिस हो ! पर करूं तो क्या

करूं। सही, भई सही—जैसी ही सही। अब तो ठन्डक पड़ी।

मि० पा०—( मुंह चूम कर ) शाबश बेटा शाबश! मैं तो जानती थी। भले मानसों की भली ही बातें होती हैं। मैं तुझे तुझसे ज़्यादा जानती हूं।

[ दर्वाज़ा खुलता है। मर्द अन्दर आते हैं। गाते, ग़ुल मचाते। आर्टी पियर्स सुरंगों की बोली बोलना आता है। लड़कियां ग़ुल सुनकर नीचे उतर आती हैं ]

मि० पा०—तुम लोगों ने भी ज़ुर्गा लगा दिये।

पा०– और तुम यहां क्या करती रहीं?

आरटी- इश्क़बाज़ी और ख़ुदा राज़ी।

[ गाता है ]

नजारा मैं तो मार आई' रे।
जहां नजारा, वहीं गुजारा
इस में किस का इजारा
नजारा मैं तो मार आई' रे॥

जहाँ बस एक बूंद पी फिर क्या—जैसे बारूद में चिंगारी लगा दे कोई। [ मुंह पोंछता है ]

मि० पा०—[ पारजिटर से ] घबराओ मत। तुम्हें भी मालूम हो जायगा कि मैं क्या कर रही थी—वक्त आने दो। जेनी! यहाँ आना! ज़रा यह कुर्सियां तो ठीक करवा ले . सुन—मैं ने सब संभाल लिया—समझी? तेरा और डिक का—सब ते हो गया।

जेनी—[ कुर्सी उठा कर ] लाओ अम्मा वह भी मुझे दे दो . . आज तो ख़ूब ख़ूब तमाशे होंगे—क्यों अम्मा है ना?

पा०—सुनो, सुनो—आओ पहले एक नाच हो जाये।

एक लड़की—आप भी नाचेंगे मिस्टर पारजिटर?

पारजिटर—मैं नहीं नाचूंगा तो क्या तू नाचेगी?—

. . जैफ़र! इधर आओ। संभालो अपना एकतारा-चिकतारा।

लड़की—मुझे तो एकतारा बड़ा अच्छा लगता है।

जेनी—सारङ्गी और भी अच्छी होती है।

पा०—जैफ़र, शुरू करो! . देखो—अब नाक भौं न चढ़े किसी की। रङ्ग में भङ्ग ठीक नहीं—क्यों, है कि नहीं?

नैन—जैफ़र दादा ज़रा ठैरो! ऐसे नहीं—कुर्सी ठीक कर दूं तो बैठना—

जैफ़र—[ जैसे कोई सवाल करता हो ] रास्तों में, सड़कों पे, मैं ने तुम्हें देखा है! और कब—आँधियों में—तूफ़ानों में!

नैन—लो बैठ जाओ . बस अब ठीक है। लेओ यह तकिया लगा लो।



८

आरटी—देखो कहीं दादा आग में न गिर पड़ें। ध्यान न रखा तो भ्रम से जा रहेंगे।

जैफ़र—[ पुराने तरीके से बहुत झुक झुक कर सलाम करता है ] रङ्ग रूप औरतों में घमंड के बीज बोता है। . . रङ्ग रूप वालों में ऐसा गरीब स्वभाव—यह दया कहां, जो एक बूढ़े की सुध रखें? . . हाय! हाड़ मास जब रह गया फिर क्या सुख क्या चैन! फिर तो बस आदमी बच्चों, जवानों, सब का खिलौना बनकर रह जाता है। . . . मै बूढ़ा हूँ—हाय मैं बहुत बूढ़ा हूँ!

नैन—जैफ़र दादा यह क्यों कहते हो? बूढ़ों में सूझ बूझ होती है। बूढ़े दुनिया का ऊंच नीच देख चुके होते हैं—उन में शान्ति होती है।

मि० पा०—तेरा सर होता है! [ सब हसते हैं ]

जैफ़र—शान्ति ! तेरा यह रङ्ग रूप देख के शान्त कौन रह सकता है? हाय ! यह रङ्ग रूप लिये जहां जायेगी—देखने वालों में आग लग जायेगी !

लड़कियां—भई ! हम सब तैयार खड़े हैं—अब देर किस बात की है ?

पा०—अपने अपने साथी—

जैफ़र—[ नैन से ] दुलहन ! दुलहन ! मैं कौन सा राग बजाऊं? . . मौत का राग सुनेगी जो गिरजे के घन्टों में बजता है—जब बिन ब्याही लड़कियां लाश पे फूल बरसाती होती हैं? . . मैं ने ख़ुद यही राग सुना था . . मेरी प्यारी ने भी यही राग सुना था। [ कुछ ठहर कर ] मेरा भी एक फूल था . . मैं ने अपने ही हाथों उसे गिरजे पहुंचा दिया [ कुछ रुक कर ] लोगों ने मेरे इस फूल को कफ़न में छिपा के ताबूत में रख

दिया था [ कुछ रुक कर ] नाबूत के गाँव में उतरने का धमाका मैं न सुना था ! [ शान्त करता जाता है और बाजा मिलाता जाता है ] वह मेरा सफ़ेद फूल अब भला किसे याद होगा ! [ कुछ रुक कर ] यह कहानी साठ बरस पुरानी है !

नैन—तुम फिर मिल जाओगे उस से जैफ़र। अब भी शायद वह कहीं तुम्हारे आस पास ही हो।

जैफ़र—[ ज़रा ऊंची आवाज़ में—और कुर्सी से कुछ उठ कर ] अरे ! अरे ! तू आ गई ! आख़िर आगई मेरी सुन्दरी—

मि० पा०—[ जैफ़र का हाथ हिलाकर ] देखो, इधर सुनो ! बजाना शुरू करो ! सुना ? बाजा बजाओ ! [ नैन से ] सूझता नहीं कि तुझे देखके उसका जी लौटा जाता है ? हट उस के सामने से ! कोई देखे तो कहे कमबख़त कैसी निर्दयी है।

पा०—अपने अपने साथी चुनलो। . चुन चुके ? . . सब अपने अपने साथी चुन चुके ?

सब—अभी नहीं। . . आरटी! यह बेतुकी बातें बन्द करो! अब ज़रा निचले हो जाओ! भला ऐसे में कहीं नाच-वाच हो सकता है? [ वग़ैरा वग़ैरा ] तुम इधर आओ। मेरे पास आ जाओ।

[ नैन डिक को देखती है। और उसके इन्तिज़ार में ज़रा अलग को खड़ी रहती है ]

मि० पा०—सुनो! सुनो! इस वक़् हम सब इकट्ठे हैं। ज़रा चुप चाप रहो। अभी एक छोटी सी बात हुई है। वह सुनलो तो नाच शुरू करना।

आरटी—सुनो भाई सुनो!

पा०—[ आरटी से ] मूंह बन्द ! [ आरटी का मुंह चिढ़ाके उसे और भी उसकाता है ]

मि० पा०—तुम्हें होगा तो बड़ा ताज्जुब। मैं आप धक से रह गई—बिल्कुल भौचक्काली !—मैं तुम्हारे खेल कूद में विघ्न डालना नहीं चाहती। बस यह छोटी सी ख़बर सुन लो। —ही ही ही ही ! क्या बताऊँ—

आरटी—आंखें मीचे कौन कहे ! आंखें मीचे कौन कहे !

एक लड़की—अई आरटी ! तुम चुप करो—

मि० पा०—सुनो ! जेनी और डिक ने एक दूसरे को पसन्द कर लिया। आज इनकी मंगनी हो गई। मैं समझती हूँ कि तुम सब इस जुगल जोड़ी को मुबारकबाद दोगे। डिक ! . . . जेनी !—लाओ अपने हाथ लाओ। . . . यह लो [ हाथ

मिला देती है ] दुनिया के सब सुख भोगो। दूधों नहाओ—पूतों फलो। . . . डिक ! [ उसका मुंह चूमकर ] अब तो तू भी मेरा ही बच्चा है—है ना ?

आरटी—डिक की अम्मा, बिचारे को क्यों छिपाती हो—अब माफ़ करदो—

सब—भई यह भी ख़ूब हुआ ! . . . भला यह कौन समझ सकता था ! . . . मुबारक ! . . मुबारक ! . . . सदा हरे भरे रहो। . . . ख़ूब फलो फूलो। . . . ऐसी झट पट !—मुझे तो धक सा हो गया ! . . . . जेनी इधर तो आ—मैं तुझे प्यार तो करलूं . . क्यों भई डिक अब तुम्हें तो कोई प्यार-व्यार कर नहीं सकता। . . . ख़बरदार इनसे न बोलना—अब यह ब्याहे-थ्याहे हैं । . . सूरत ही से टपकने लगा—अभी से—ज़रा सूरत देखना !

नैन—डिक, डिक, अरे डिक! हाय डिक! यह क्या किया? क्या मुझ से यह सब तुम्हारा खेल ही था?

डिक—मुझ से डिक-डिक मत कर! चल हट यहाँ से!

मि० पा०—अरी यह तू डिक के पीछे क्यों पड़ गई?

नैन—मैं समझती थी कि शायद उसे मुझ से कुछ कहना हो—

डिक—तुम समझती थी कि यह काठ का उल्लू अच्छा मिला! क्यों यही समझती थीं ना?

नैन—[ उस की तरफ़ देखती हुई हलके हलके एक कुर्सी की तरफ़ यह कहती हुई जाती है ] डिक मैं समझती थी कि मेरे दिन फिरने वाले हैं—

पा०—नैन !—नैन ! यह तू तमाशा क्या कर रही है ?
आ—इधर आजा—अब नाचेगी कि नहीं ?

मि० पा०—शायद यह नैन भी बिल्कुल अपने बाप की सी है—

जेनी—[ थिरक थिरक कर ] यह कैसे—यह कैसे अम्मा ?

मि० पा०—यह भी शायद हवा में टंग कर ही नाच सकती हो—

नैन—[ उस के पास जा के ] हां हां !—मैं हूँ अपने बाप की सी !—कमीनी—तू मुझे सुनाती क्या है ?

पा०—अरे यह आज तुझे हो क्या गया है ?—इतने लोगों के बीच में !

मि० पा०—तुम अपनी टांग न अड़ाओ—मै इस से समझ लूंगी ! [ लोगों से ] बात यह हुई है

कि यह मम्मी समझती थी कि ज़रा अपने फेस लटका के—गले के दो एक बटन खुले रख के—डिक बिचारे को रिझालेगी—

टोमी—अरे यार डिक हमारे जल्दी आने से कुछ खलल तो नहीं पड़ा—

जेनी—इस में क्या है? बहिन नैन हमारी प्रेम के बदले में अपना तन मन सब दे देना ठीक समझती हैं—जो चाहे ले ले!

टो० पा०—इस घर पे तो यह दया करें! यहां तो अब इनका लेना देना हो चुका! कहे कौन! अभी इसी बड़े दिन की बात है कि इन बीबी बच्चों के अब्बा को चोरी के लिये फांसी हुई है।

पा०—जेनी की अम्मा! यह क्या वाहियात है?

मगर नहीं--यह उसकी सज़ा है! मुझे भी तो उसने बात साफ़ साफ़ नहीं बताई—

सब—अरे !!

नैन—हां—हां—लोगों तुम भी कान खोल के सुन लो! . . मेरे अब्बा को फांसी हुई है—ग्लोस्टर में। . . . मुझे चाहिये था मैं तुम्हें बता देती—तब फिर तुम से मिलती जुलती . . डिक, डिक मैं ने बहुत चाहा था कि तुम्हें बता दूं! . . . डिक मैं अपना सब कुछ तुम्हें दे चुकी! . जैसा तुमने आज मुझे बरता, वैसा आज तक किसी ने नहीं बरता था . . अब बस मेरी एक ही ख़ुशी है कि तुम दुनियां के ख़ूब ख़ूब सुख भोगो—

डिक—बस हो चुका! देखो वह जैफ़र बैठा है—जाओ उसी को अपनी यह राग माला सुनाओ।

उसे और कुछ करना भी नहीं है। मैं तुम से बाज़ आया . . जेनी, यहाँ आओ। आज तुम मेरे साथ नाचोगी।

जेनी—[ खिलखिला के ] इस में तो मैं भी डिक गरविल की मदद, कर सकती हूं—

डिक—तो सोचती क्या हो—करो ना ?

जेनी—क्या कहूँ ! मेरा दिल फूल की तरह खिला जाता है ! यह बहिन नैन का कहना है—और जब यह कहती हैं तो इस में कुछ न कुछ बात तो होवे ही गी।

नैन—हाय मैं मर चुकी होती—हाय मैं मिट चुकी होती !

डिक—अरी सुन—अब हमें नाचने-वांचने देगी कि नहीं ? [ नैन एक कोने में चली जाती है ]

जैफ़र—दुलहन ! दुलहन ! आंसू पोंछ डाल। यह झड़ी भला कब तक लगी रह सकती है ? . पर प्रेम एक फूल है। सुन्दर—सुहावना—अनमोल ! . यह फूल बहुत बड़ा और ख़ून की तरह लाल लाल है . . यह कुम्लाना नहीं जानता—सदा बहार है—सदा बहार है ! [ नाच की गत बजाता है ] मेरे दिल के दर्द की तरह . मेरी प्यारी की याद की तरह . . सदा बहार है ! . . सदा बहार है ! [ सब नाचते हैं ]

[ परदा ]

# एक्ट ३

[ सीन—जो पहले था। नैन पीठ को एक मेज़ के पास बैठी है। अन्दर से बोलने चालने की आवाज़ें आती हैं। जैफ़र अपनी कुर्सी पर बैठा है ]

नैन—ज़िन्दगी कैसी कड़वी, कैसी दुःख भरी है—हाय जैफ़र! ज़िन्दगी बड़ी कड़वी बड़ी दुःख भरी है!

जैफ़र—लड़की! तेरे दूध के दाँत भी नहीं टूटे तू जीने की कड़वाहट क्या जाने?

नैन—कुछ दिन बरसों के बीतने से ही हम बूढ़े थोड़ी हो जाते हैं।

जैफ़र—हम में से कितनों को तो चलबसने की आस ही रह जाती है—होश आने के दिन से ही!

नैन—मुझे भी यही आस है!—हाय जैफ़र दादा—मैं कहीं चलबसती—मैं कहीं मर चुकती!

जैफ़र—मरना तो सब ही को है . . आगे पीछे। . . आगे पीछे—

नैन—हाय मैं तो आज ही मर जाती—आज ही गड़ जाती!

जैफ़र—मैं भी यही चाहा किया—जब से मेरा फूल मुरझाया—पर क्या? . . साल पे साल बीतते गये . . अनगिन्ती . पहाड़ से! . . तन सूख के पिंजर हो गया—यह हाड़, यह मास रह गये! . . कभी रोज़ी लग जाती थी . . कभी काम नहीं मिलता था . . गुज़र गई! . . पर अब हाथ पांव काम नहीं देते . . शिकस्त हो गया हूँ—बिलकुल शिकस्त हो गया हूँ—

नेल—जैफ़र फिर तो शायद तुम उस से जल्दी ही मिल जाओगे—

जैफ़र—नहीं, नहीं, अभी तुम्हीं नहीं! . . मेरे पास उस की नन्ही सी गोर है। मुझे इसकी देख भाल करनी है—फूलों से—और सब तरह से। . जो मेरे पास कहीं सोना होता—चाँदी बड़ी थैलियाँ भर भर के, जैसी राजा बाबूओं के पास होती हैं—तो मैं उसकी नन्ही सी गोर को पक्का करवाता—इस पे फूल बूटे खुदवाता—गुलदस्ते बनवाता . . और उपर वाले पत्थर पे उसका प्यारा मुखड़ा उतरवाता . . मेरे फूल की मूरत सङ्गमरमर में गढ़ी जाती—चाँदी से सफ़ेद—जिससे सफ़ेद बादशाहों को भी न मिलता . पर लाचार रहा . दाम कहाँ जो पत्थर लेता इसी लिये अभी नहीं मर सकता—नहीं, अभी हरगिज़ नहीं मर सकता!

नैन—जैफ़र ! . . . क्यों जैफ़र ? . . . जब प्रेम ही मर मिटा तो फिर रह क्या जाता है ?

जैफ़र—गोर . . . गोर रह जाती है ! . . . लाचारों, दुःखियारों का सहारा—बस एक गोर रह जाती है ! . . . मेरे पास अपने फूल की गोर है ! . . . आठ बिन ब्याही लड़कियाँ ताबूत की चादर थामे थीं . . . कपड़े सफ़ेद . . . मेरे फूल के बराबर की ! . . . सफ़ेद फूलों के ढेर में मेरा फूल छिपा हुआ था . . . आठ थीं—बिन ब्याही—सफ़ेद कपड़ों में—जैसी तू है । . . . गिरजे के घन्टे में मौत के बोल बज रहे थे . . . हाय, वह मेरे सफ़ेद फूल को मिट्टी में दबाए जाना !—

नैन—हाय, जैफ़र ! वह बहुत छोटी थी . . . भला बिचारी के मरने के क्या दिन थे !

जैफ़र—जब उसे उठाया है आठ दिन ब्याही लड़कियाँ साथ थी—सफ़ेद कपड़े पहने . फिर यह बड़ी हुई—पूरी औरत—मोहिनी सी—बड़ी ख़ूबसूरत . फिर बूढ़ी हो गई . फिर एक के बाद एक—एक के बाद एक चल बसीं . . इन के घर द्वार सब सूने हो गये . . खन्डर . खिड़कियाँ टूटी हुई—जिधर देखो घास ही घास, घास ही घास ! . . . अब यह सब दुनिया से उठ चुकीं . . जब मैं भी उठ जाऊंगा तो मेरे फूल के रङ्ग रूप का चर्चा करनेवाला कोई नहीं रह जाएगा . . कोई इतना भी नहीं रहेगा जो यह जानता हो कि वह पड़ी कहाँ है। . . मैं ने इस की नन्हीं सी गोर को सीपियों से सजाया है . . . इस में से सदा फूल निकल ते रहते हैं—जो

उसके सन्देसे—उसके नन्हे नन्हे चमकीले शब्द हैं। . . उनसठ साल से यह नन्हे नन्हे फूल फूलते हैं कुम्हलाते हैं—यह सन्देसे बराबर मेरे पास आते हैं।

नैन—हाय जैफ़र! एक गोर अब मेरे पास भी है—और अभी उनसठ साल बिताने हैं!

जैफर—मेरी चाँद सी सुन्दरी, इस गोर में तूने किसे दफ़नाया है?

नैन—अपने इस दिल को जैफ़र—अपने इस दिल को! . . पर इस गोर में से फूल कभी न निकलेंगे . . . मुझे भी जैफ़र शायद यहाँ उनसठ साल बिताने हों—जैसे तुमने बिताये . उनसठ साल . . उनसठ का बारा गुना . . फिर चौगना . . इतने महीने—इतने हफ़्ते . . और एक साल में तीन सौ

पैंसठ दिन होते हैं . . रोज़ उठना। काम काज करना! फिर पड़ रहना—न जीने का मज़ा, न मरने का रंज! जैसे मुर्दा—मुर्दा—मुर्दा—हर घड़ी मुर्दा! . . नहीं, नहीं—यह कौन सह सकता है! . . . क्यों जैफ़र, मुझे यह तो बताओ तुम्हारा फूल कुम्हलाया कैसे?

जैफ़र—लड़की उस दिन शाम को एक सवार दिखाई दिया था—सुनहरा—सुनहरा—सर से पाँव तक सुनहरा!

नैन—और तुम जैफ़र अपने फूल के पास बैठे थे?

जैफ़र—उसने खिड़की में से बाहर को देखा—इसी मेरे सफ़ेद फूल ने देखा फिर चिल्लाई—'आता है—आता है—दरिया चढ़ा आता है'। . . फिर एक बिगुल बजा—उसी सुनहरे सवार

ने एक बिगुल बजाया . यह उठ खड़ी हुई—यही मेरा सफ़ेद फूल उठ बैठा! . . फिर खिलखिला के हंसी—हंसी—हँसते हँसते लोट पोट गई . . फिर पीछे को गिर पड़ी—यही मेरा सफ़ेद फूल कुम्हला के गिर पड़ा! . उसके सुनहरे बाल तकिये पे बिखर गये। और फिर—ख़ून! हाय ख़ून पे ख़ून! मेरी प्यारी का ख़ून! मेरे सफ़ेद फूल का ख़ून!—

नैन—जैफ़र—जैफ़र! थी तो वह तुम्हारी गोद ही में ना?

जैफ़र—मेरे कलेजे से लगी हुई—मेरा सफ़ेद फूल मेरे दिल से टेक लगाये था . . और बूढ़ा आ रहा था—बढ़ता आ रहा था—दरिया तुफ़ान की तरह उमंडता आ रहा था!

नैन—जैफ़र, जैफ़र, हाय जैफ़र ! इसने भी क्या मौत पाई—अपने सच्चे प्रेमी की गोद में ! जैफ़र तुम ने तो जी भर के अपनी प्यारी के प्रेम का रस लूट लिया पर अब उनको बताओ जिन्हें सदा प्रेम का हलाहल ही मिला हो—जिन्हों ने प्रेम का कभी कोई सुख न भोगा हो ! हाय जैफ़र यह बूढ़ा कहीं मुझे ले जाता—हाय मैं कहीं इसमें डूब मरती !

जैफ़र—लड़की ! आज चौदहवीं है—आज पूनों का चांद है !

नैन—पूनों का चांद है ! आज यह बड़ा धुन्दला धुन्दला निकल रहा है—और कैसा लाल लाल है ।

जैफ़र—जब उसके तकिये पे इसकी चांदनी पड़ रही थी यह उस दिन भी ऐसा ही लाल लाल था !

नैन—वसन्त की पूनो है आज?

जैफ़र—आज रात को दरिया ख़ूब चढ़ेगा!

नैन—ख़ूब चढ़ेगा?

जैफ़र—हम में से किसी न किसी के लिये!

नैन—हम में से किसी न किसी के लिये—यह क्यों जैफ़र?

जैफ़र—देख, देख चढ़ रहा है! हम में से किसी न किसी के लिये—हम में से किसी न किसी के लिये!

नैन—तुम्हारे लिये तो नहीं जैफ़र?

जैफ़र—मेरा वक़्त अभी नहीं आया—पर यह दरिया चढ़ रहा है, हम में से किसी न किसी के लिये! . . जब चढ़ता है किसी न किसी को ले जाता है . हाय! इसी ने मेरे फूल को भी ले लिया था . . कोई ऐसा नहीं जो इस

बे रहम को सूली पे चढ़ा दे ! . . . पहले कीचड़ ही कीचड़ हो जाती है . . फिर रेती के कगारे बनते हैं . . फिर कीचड़ की नहरों पे नहरें लग जाती हैं . . बगलों के झुंड के झुंड मछलियाँ पकड़ने लगते हैं . . बूड़ा आने से पहले रेत ही रेत—फिर कीचड़ ही कीचड़ . . कछार में गोरू पानी पीने आते हैं । रेत पे चलते हैं—लाल लाल गायें । पर बूड़े के डर से सहम के रह जाती हैं !

नैन—इन्हें न कोई दुःख न दर्द—जानवर जीने के जंजालों से परे हैं । उन्हें बस एक ही काम है । चरना ! धूप में, साये में—बस चरना—चरना—

जैफ़र—बूड़े से यह भी थर्राते हैं . . क्योंकि पहले ही से एक अजब हुन्कार सी होने लगती है . दूर से, कोसों दूर से, समन्दर के बीच

में से इस हुन्कार की गूंज हवा के साथ फैलती है . . जहाज़ों के खिवैयें इसे सुन कर अपनी जान की ख़ैर माँगने लगते हैं ! और यह बढ़ती चली आती है, पास आती जाती है—भन-भन, ज़न-ज़न करती ! . . फिर इसमें एक गर्राटा सा पैदा हो जाता है—शर—शर ? गुर-गुर—हश-अश—हश—अश । और इस गर्राटे के साथ, मौजें उमंड़ उमंड़ कर चट्टानों से टकराती हैं । . . फिर फेन ही फेन ! दूध के से सफ़ेद फेन, चारों तरफ़ उड़ उड़ कर फैल जाते हैं । जैसे चिड़ियाँ हों—जैसे हंस तालों में उड़ते तैरते फिरते हों !

१—बाढ़ आती है—उमंड़ती—बादल की तरह उमंड़ती हुई ! बिजली की तरह चमकती हुई !

फ़र—और जूं-जूं-जूं-जूं करती समन्दर की तरह उबलती—उफनती है फिर फैल जाती है

और फ़ौज की तरह आगे बढ़ती है—क़तारों की क़तारें—लम्बी लम्बी ! . . कभी घूमती है, चक्कर खाती है,—बगूले की तरह नाचती हुई, धुएँ की तरह बल खाती—उलटती—पुलटती—बढ़ती आती है—बढ़ती आती है—

नैन—ज़न-ज़न—ज़न-ज़न —

एक काली लकीर सी—स.फ़ेद फेनों से ढकी हुई !

जैफ़र—जैसे एक नाग हो !—एक समन्दर का अजगर, अपना फन उठाये बढ़ता फुंफकारता चला आता हो—

नैन—चमकीला मुकट लगाये ! . . . लागू ! . . भूका !—

जैफ़र—झपट कर, गरज कर, यह तुम्हें झंझोड़ डालता है ! अपने बालों में तुम्हें दबोच लेता है—

नैन—अपने बालों में यह पानी का नाग अपने बालों में—मुझे—दबोच लेता है !—

जैफ़र—फिर सीटियाँ बजाता हुआ, गीत से गाता हुआ—समन्दर का शोर और ग़राटा इसके पीछे पीछे हाय !—यह इन्हें ले जाता है . . यह दरिया में खड़े होते हैं और यह उनके उपर से निकल जाता है—उनके सर पर से, उनके सर के उपर से निकल जाता है—साँपं—साँपं—साँपं— करता हुआ !—

नैन—अथाह—अथाह—अथाह गहराई में को !—आँखों में पानी—बालों में पानी ! पानी ही पानी !! . . और आज ही पूनो का चाँद है . . आज ही बसन्त की चौदहवीं है !

जैफ़र—[ खुश्राब से जैसे कोई चौंक उठता हो ] बहुत से मछेरे आज अपने जाल खो बैठेंगे—बाढ़

इन्हें बहा ले आएगी। . . हाय! मैं ने देखा है, दूर—दूर—कोसों दूर—इन जालों को बहा ले जाती है। . . . बहाओ के रुख बहुत उपर जाकर यह कहीं फिर इन्हें ढूंढ पाते हैं . . ग्लोस्टर के आगे . आर्टबरी से भी आगे . . बड़े बड़े सुनहरे सुनहरे फूल के पेड़ उन पर झूमते होते हैं। ऊंचे ऊँचे सेब के दरख्तों का उन पे साया होता है। . . . लाल लाल सेब, सुनहरे सुन्हरे सोने के से सेब पानी में गिरते हैं पानी ऐसा शान्त होता है जैसे ताल का पानी जब हवा न चल रही हो . . यह सेब जालों में फंस कर रह जाते हैं।—

नैन—और मछलियां जैफ़र?

जैफ़र—अनोखी—अनोखी। बड़ी ही अनोखी। समन्दर के अन्दर की।

नैन—हां—बड़ी ही अनोखी, जैफ़र, बड़ी ही अनोखी!

कल इन जालों में एक बड़ी ही अनोखी मछली होगी ! . . सुन—सुम . . पुल के पत्थरों से टकराती हुई सफ़ेद सफ़ेद . . पानी में कुछ सफेद सफ़ेद सा मालूम होगा . . . यह मुझे बाहर निकालेंगे—यही मछेरे . . यह मेरे बदन को टटोल टटोल के देखेंगे ! . [ कांप के ] हाय यह मैं नहीं सह सकती— मैं नहीं सह सकती—

[ अन्दर से ज़ोर से हंसने की आवाज़ आती है। और छुरी कांटों की। दर्वाज़ा खुलता है। जेनी अन्दर आती है। एक गंदी प्लेट और गंदे छुरी कांटे लिये हुये है। जैसे ही जेनी घुसती है मिसेज़ पारजिटर की अन्दर से आवाज़ आती है ]

मि० पा०—अरी वह है वहां ?

जेनी—है तो।

मि० पा०—उसे यहां भेज दे।

जेनी—[ नैन से ] अम्मां तुम्हें अन्दर बुला रही हैं।

पा०—[ अन्दर से ] अरी यह दर्वाज़ा तो ज़रा बन्द कर दे। हवा के मारे मेरा सर उड़ा जाता है!

[ जेनी लौट कर दर्वाज़ा बन्द कर देती है ]

नैन—जेनी यह हाथ में क्या लिये हो?

जेनी—[ कुछ बेचैनी के साथ ] अम्मां तुम्हें अन्दर बुला रही हैं।

नैन—[ उठकर ] अम्मां को बुलाने दो—पहले मेरी बात का जवाब दो . . मेरी बहिन—मेरी प्यारी बहिन—मेरे नन्हे से रंगीले सपोले—बता यह हाथ में क्या लिये है?

जेनी—( सहमकर ) क़ीमे के समोसे अम्मां ने जैफ़र के लिये भेजे हैं। वह बिचारा खुश हो जायेगा।

नैन—[ देखकर ] और यह पलेट किस की कुटी उठा लाई है? यह तो बता दे—मेरी नन्हीं सी बहन!

जेनी—[ हकलाकर ] अम्मां की—

नैन—यह गन्दी है कि नहीं ?—बोल ! यह छुरी काँटे गन्दे हैं कि नहीं ?

जेनी—[ दिल कड़ा करके ] जैफ़र को तो गन्दे साफ़ का बड़ा होश है ना! इसके से बुढ़ों को जो मिल जाये वही ग़नीमत है . . जैफ़र यह लो । यह कुछ थोड़ा सा खाना है, खालो ।

नैन—[ उसके पास जाकर ] नहीं . . मेरी प्यारी बहिन नहीं . . मेरी घुघमूंही—मेरे आस्तीन के सांप नहीं—यह ग़नीमत नहीं है ! . . यह तो बताओ तुमने भी इनमें से कोई समोसा खाया है ?

जेनी—[ ढीठाई दिखा कर ] तुम ख़ुद खाओ मैं क्यों खाती ?

नैन—खाया कि नहीं—यह बताओ ? . . मरी हुई

मेड़ी थी . . पिछले हफ़्ते मरी थी . .
यह सब तो जानती हो ना? . . अब बताओ
तुमने इसमें से कोई समोसा खाया, कि नहीं?

जेनी—नहीं खाया। मैं तो जानती हूँ वह किस बि-
मारी में मरी थी, मगर जैफ़र को क्या ख़बर
है . . लेओ जैफ़र—देखो यह क्या है?

नैन—[ आग भभूका हो कर ] अच्छा, अब ज़रा बैठ
तो जाओ। मेरी दिल्ली मित्र—इधर, इधर बैठ
और खा इन समोसों को मेरे सामने—खा इन्हें—
खा नहीं तो जान ले लूंगी—डायन! . . न
बड़ों का मान न छोटों पे दया—ले आज यह
अपना कलेजा खा!—दूसरों का कलेजा तो तूने
जी भरके खाया है! . . खा इसे! .
मेरी विष भरी साँपनी—अब खा इसे!

जेनी—मैं जा—मैं जाके अम्मां को भेजे देती हूँ—

नैन—[ उसे रोक कर ] नहीं हरगिज़ नहीं ! . . [ ज़बरदस्ती एक कुर्सी पर बैठा कर ] ठूँस ! . . निगल इसे !—[ जेनी डर से बदहवास हो कर खाने लगती है ]

जेनी—भई मेरा जी मतलाता है—

नैन—खा इसे ! —

[ जेनी खाती है । फिर रुकती जाती है ]

जेनी—[ एक निवाला खा कर ] यह मुझे घूरती क्यों जाती हो ?

नैन—मैं अपनी मित्र को देख रही हूँ जेनी—अपनी दिली मित्र को !

जेनी—[ एक और निवाला खा के ] तुम्हारे घूरने से मेरा दिल धड़कता है ! घूरोगी तो मैं नहीं खा सकती !—

नैन—खा क्यों नहीं सकती जेनी—खा क्यों नहीं

सकती ! यह तो तेरी शादी की केक है—शादी की ! . . जेनी—यह तो तेरी शादी की केक है !

जेनी—[ चीख मार कर ] हाय !—मुझे ऐसे मत घूरो !

नेल—[उसके और भी पास आती है। और उस की आँखों में आँखें डाल देती है। ] नहीं क्यों देखूँ—जेनी नहीं क्यों देखूँ?—मैं तो देखूँगी ! . . तेरे आर पार देखूँगी ! . . मुझे तेरी रूह देखनी है—रूह [ हलके हलके और दबी आवाज़ में ]

जेनी—हाय ! . . हाय मैं मरी !

नैल—तेरी सापन की सी पीली पीली आँखें हैं जेनी—सापन की सी ! इन में मुझे तेरा दिल—तेरी रूह दिखाई देती है ! . . जानती है मुझे क्या दिखाई दे रहा है ? [ खामोशी ] तेरा दिल दिखाई दे रहा है ! . . बर्फ़ सा है

जेनी—बर्फ़ सा ! . एक छोटी सी, कमीनी, निर्दयी चीज़ जिस में छल, फ़रेब भरा हुआ है ! . . . तू बड़े भागों वाली है जेनी—बड़े भागों वाली ! . . न कभी किसी को चाह सकती है—न किसी से नफ़रत कर सकती है ! . . एक कुत्ता तुझ से ज़्यादा प्यार—तुझ से ज़्यादा नफ़रत कर सकता है !—नहीं—कीड़े—मिट्टी के कीड़े भी ! . . जानती है जेनी ऐसे लोगों का क्या हाल होता है ?

जेनी—[ हाँपते काँपते ] अम्मा ! अम्मा !

नैन—सुन जेनी सुन !—मैं बताती हूँ तेरा क्या हाल होने वाला है ! . . इन तेरी पीली पीली आँखों में मुझे तेरा अगला पिछला हाल सब साफ़ दिखाई दे रहा है । . . मैं एक बड़ा सा शहर देख रही हूँ ! . . इस में लम्प जल रहे हैं । . . एक बड़े मकान के कोठे

पर तू बैठा है—अपने मुर्दा गालों को लाल रंगे हुये! . . तेरी यही पीली पीली आखें नशे पीते पीते सूज आई हैं। . फटी पुरानी घघरी लिपेटे—बैठी खों खों खाँस रही है! और सारा बदन थर थर काँपता जाता है! . . जेनी—जेनी—दुनिया में छोटे बेदर्द, कमीने, छली, फ़रेबी, दिल वालों को यही बदला मिलता है! . . सुन! . . मुझे एक गन्दी कोठरी दिखाई देती है . . इस में एक गन्दी चारपाई बिछी है—और इसी पर तू मरी पड़ी है! . अपने रंगे गाल तकिये पर धरे हुये मुर्दा ढोने वाले ठेले के इन्तिज़ार में! . . अब जा! बस जा यहाँ से! . . दूर हो! . . भाग कमबख़्त!!

[ जेनी बेदम, लड़खड़ाती दर्वाज़े की तरफ़ जाती है ]

जेनी—हाय! हाय मैं मरी! [ दर्वाज़े के सहारे से

खड़ी हो जाती है। हाथ कुंडी पर हैं। सहमी हुई, बद हवास, बेहिस सी ]

जैफ़र—[ कुछ उठकर और हाथ से आँखों की रोशनी से बचा कर ऊपर को देखता है ] लड़की तू अपने सफ़र के लिये तय्यार है?

नैन—अपने सफ़र के लिये?

जैफ़र—खा पी रख मेरी मोहिनी—वह आता होगा!

नैन—कौन आता होगा?

जैफ़र—वही सुनहरा सवार मेरी सुन्दरी—वही आता होगा!—सड़क पर से!

नैन—अच्छा—वह सुनहरा सवार! . हां. जैफ़र हम खा पी रखें—सफ़र बहुत दूर का है!

[ डोली खोलती है। और सेब का मुरब्बा निकालती है फिर एक बड़ी छुरी और पलेट लाती है—फिर बरांडी की बोतल। सेब के टुकड़े करके जैफ़र को देती है ]

जैफ़र—[ लड़खड़ाता हुआ उठता है । हाथ उठाकर कहता है ]
मेरे पालने वाले यह रोज़ी तेरी भेंट है;
दुनियाँ की भलाइयाँ—दुनिया की सब अच्छी
चीज़ें हमें पहुँचाने वाले—यह तेरी भेंट है।
आमीन ! [ खाता है ]

नैन—आमीन। [ बाहर वाले दर्वाज़े को कोई खटखटाता है।
पैरों की आहट होती है। ] जैफ़र—लेओ यह पीलो।
[ एक दो घूट बरांडी पिलाती है ]

जैफ़र—[ नैन के लिये पीता है ] सफ़र सुख चैन से
कटे . . तेरे रास्ते में फूल खिले हों। .
जिधर जाये तुझ पर फूल बरसें, . . . ओ
सुनहरी टापों वाले घोड़ो !—ओ सुनहरे घोड़ों
—आओ ! जल्दी आओ ! [ बाहरवाले दर्वाज़े को
कोई फिर खटखटाता है ]

आवाज़—अरे कोई अन्दर है?—खोलो दर्वाज़ा !

नैन—लेओ जैफ़र यह पीलो—

[ बाहर के दर्वाज़े को कोई बड़े ज़ोर ज़ोर से ठोंकता है। अन्दर वाले दर्वाज़े को लोग अन्दर से भड़भड़ाते हैं। जेनी कुंजी पकड़े हुये है इसलिए वह बाहर नहीं आ सकते। ]

जेनी—हाए!—मुझे इससे बचालो! . . कोई मुझे इससे बचाले! [ दिवार से लग कर गिर पड़ती है ] हाए मैं मरी—

[ मिस्टर और मिसेज़ पारजिटर और डिक बाहर आते हैं। बाक़ी सब दर्वाज़े के पास जमा हो जाते हैं ]

डिक—[ जेनी का हाल देखता है। और ख़ुश होता है कि नैन पर बिगड़ने का कोई बहाना तो मिला। गुस्से से ] क्योंरी यह इसे क्या कर दिया तूने?

मि० पा०—[ नैन की तरफ़ गुस्से से बढ़ कर ] अरी तुझ से यह दर्वाज़ा नहीं खोला जाता? . . घुग्घू की सी आँखें निकाले खड़ी है!!

पा०—जेनी, यह इसने कर क्या दिया तुझे ?

मि० पा०—[ मुड़कर ] जो कुछ भी किया हो तुम फ़िक्र मत करो ! तुम जाओ ज़रा यह दर्वाज़ा तो खोल दो ! . . जेनी, उठो !—अन्दर जाओ ! . . लो बस अब उठ खड़ी हो . . देखो यह सब क्या कहेंगे !

डिक—अरे ! . . इसका तो—इसका तो . . अम्मां इसे तो कोठरी में बन्द कर देना चाहिये

मि० पा०—यह दर्वाज़ा तो खोल !

[ जेनी लड़खड़ाती हुई अन्दर चली आती है ]

पा०—इसका यह हाल हो कैसे गया ?

नैन—मालूम इसने अपने आप को देख लिया है ! . . अपने को देख के बहुत कम लोगों का दिल ठिकाने रहता है . . ज़मीन के कीड़े तक इससे घबराते हैं !

मि० पा०—क्यों री यह क्या तूने इन सेबों को काटा है ?—

पा०—चुप भी रहो !—और लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे ?—

मि० पा०—[ बड़ी भयानक आवाज़ में ] और क्यों ? . . यह तेरे मामूं की बोतल है ना ?—ठैर तो जा, ऐसा मजा चखाया हो कि तू भी याद करे। [ खट खट की आवाज़ ]

आवाज़—खोलो ! . . खोलते हो कि नहीं ? . . यहां किसी के पास बेकार वक्त नहीं है !

मि० पा०—[ दर्वाज़े की तरफ़ जाती है। बड़ी ही मीठी बनावटी मुस्कुराहट चेहरे पर ] क्या कहूँ—ऐसी गड़बड़ थी कि कान पड़ी आवाज़ नहीं सुनाई देती थी ! . . कुछ मेहमान आये हुये हैं . . ये हैं ! न जाने कितनी देर से यहां खड़े सूख रहे

होंगे ! [ कनखियों से आने वालों को देखकर ] आइये . . . भीतर आजाइये . . . . निल, कोई आया है तो बैठने का ठिकाना देखो कि नहीं !— ज़रा कुरसियां बिछवा दो ! . यह कौन मिस्टर ड्रू हैं ?—बड़े भाग ! बाहर क्यों खड़े हैं—अन्दर आ जाईये ना।

ड्रू—मेहरबानी—मेहरबानी।—

[पादरी ड्रू, कप्तान डिकसन, और एक कानिस्टबिल अन्दर आते है। कानिस्टबिल के हाथ में एक हैन्ड बैग है ।]

पारजिटर—[ कुरसियां लाता है ] पादरी साहब सलाम।

ड्रू—सलाम पारजिटर सलाम—

पारजिटर—[ डिकसन से ] बन्दगी अर्ज़ है ।

डिकसन—[ खुश्की से कानिस्टबिल से ] बेग को मेज़ पर रख दो ना—हाथ में क्यों टाँगे हुये हो ?

ड्र०—अरे डिक ! . . हैं, यह क्या एलान है ? भाई ख़ूब बढ़ रही है ! . . नैन, अच्छा—अच्छा ! बन्दगी . . भाई सब को बन्दगी—सबको ।

पा०—[ मिसेज़ पारजिटर के कान में खुसपुस करता है ] ज़रा मेज़ तो सफ़ा करवा दो—

डिकसन—[ उलझ कर ] मेज़ की सफ़ाई-वफ़ाई रहने दो !

मि० पा०—क्या कहूँ—सब जी में क्या कहेंगे ! . . सारा घर बे ठिकाने हो रहा है । . . कुछ लोगों को बुला लिया था—इस से सब तितर बितर है । ( नैन से बड़े मीठे लहजे में ) नैन ज़रा मेज़ पे से यह मुरब्बा तो उठा ले—कैसी अच्छी बिटिया है !—

नैन—मामी, अपनी बनावटी लल्लो चप्पो रहने दो . मैं यह ढोंग अब बहुत देख चुकी !

मि० पा०—[ ड्र० से ] हमारी इस बच्ची को थीयेटर

करने की बड़ी लत है . . और नज़र न लगे ख़ूब पार्ट करती है। ग़ज़ब का !—इतनी सी जान के लिये—

डिकसन—[ उलझ कर ] ड्रू—ड्रू—आख़िर यह है क्या ?

मि० पा०—वह अच्छा सा तो नाम है—क्या कहते हैं उसे—यही शेकसपीयर का कोई पार्ट था—

ड्रू—हाँ—हाँ—बेशक बेशक . . अच्छा तो अब आप सब साहब ज़रा चुप हो जाइये। [ हाथ से चुप होने का इशारा करता है। सब चुप हो जाते हैं ] मुझे अफ़सोस है कि हम लोग बड़े बे मौक़ा आये हैं लेकिन . . [ जो लोग अन्दरवाले दर्वाज़े से झाँक रहे हैं उन्हें देख कर ] अरे . . यह क्या . . आप लोग भी अन्दर आ जाइये। . . यहाँ आजाइये . . अच्छा, ख़ैर। . . हाँ

तो सुनिये। . . . हम एक बड़ी ख़ुश ख़बरी सुनाने आये हैं। मुझे ऐसी ख़ुशी जैसी इस वक़्त है बहुत कम नसीब होती है। [ कुर्सी लेकर बैठ जाता है ] अच्छा ख़ैर . . आप भी बैठ जाइये मिस्टर डिकसन—

कसन—[ ख़ुश्की से ] कप्तान डिकसन कहिये !

—हाँ हाँ—बेशक बेशक—कप्तान डिकसन। बेशक कप्तान डिकसन। . मुझ से ग़लती हुई कप्तान डिकसन। माफ़ कीजियेगा। मगर ख़ैर—हाँ तो सुनिये ! मुझे पूरा यक़ीन है जहाँ आप लोगों को मालूम हुआ कि हम क्यों आये हैं आप बड़े ख़ुश होंगे। और अपने इस मज़े में ज़रा सा ख़लल पड़ जाने का कुछ ख़्याल न करेंगे।

कसन—( बिगड़ कर ) मिस्टर ड्रू माफ़ कीजियेगा—

मगर अब हम मामले की बातें शुरू करें तो अच्छा है ना ?

ड्रू०—बेशक—मगर—

डिकसन—[ नरमी से ] नतीजा यह होगा कि मुझे डाक की गाड़ी नहीं मिलेगी—और मैं पड़ा रह जाऊँगा !

ड्रू०—अजी नहीं—हरगिज़ नहीं— यह हो ही नहीं सकता . साहब अभी दस मिनट बाकी हैं—बल्कि ज़्यादा ! . . अभी बहुत वक़्त है—ढेरों ! . . दूसरे गाड़ी आने से बहुत पहले आप को उसका बिगुल सुनाई देगा।

मि० पा०—यह तो है। बिगुल तो बहुत दूर से सुनाई दे जाता है—अगर आप डाक गाड़ी में जाना चाह रहे हों—

जैफ़र—बिगुल ! . . बिगुल ! . . और सड़क

पर सुनहरी टापों के कड़कड़ाते हुये आने की आवाज़ ! . . [ मेज़ की तरफ़ को बढ़ता है ] यह टापें ऐसे बोलती हैं जैसे दिल धड़कता है ! . . अभी, अभी, दम भर में, इनकी गूंज सुनाई देगी !--

मि० पा०—[ ग़ुस्से से—दबी आवाज़ में ] ख़ुदा की मार इस की सूरत पे ! . . खूसट—कमबख़्त कहीं का ! . निकालो मुए को बिल—इस की बड़ की भी कोई ओर छोर है ! . . [ डिकसन से ] कुछ नहीं, कुछ बात नहीं है—बिचारा सठिया गया है ।

[ जैफ़र दर्वाज़े के तरफ़ जाता है और बाहर चाँदनी चिटकी हुई देखता है ]

जैफ़र—(दर्वाज़े से ) शायद—शायद—वह मुझे रास्ते ही में मिल जाए ! [ बाहर चला जाता है ]

ड्रू—यह बिचारा हमारे गांव के उन लोगों में है—आप समझें,—जिनका—[ अंगुली से अपना माथा ठोकता है। ]

डिकसन—[ कड़वेपन के साथ ] मैं तो समझा यह भी शायद शेक्स्पीयर का कोई पार्ट था—

पा०—क्यों नहीं! क्यों नहीं! कभी यह सचमुच अजब तरह की बातें करता है—

ड्रू—बेशक—बेशक! ग़रीब है—लाचार है बिचारा!

डिकसन—ख़ैर हुआ भी—अब यह बताइये मकान तो यही है ना?

ड्रू—और नहीं तो क्या—यही है साहब यही है! बेशक यही है। बेशक। बेशक।

डिकसन—[ बेग उठा कर खोलता है। ] मैं समझा था कि शायद—यह—यह—अच्छा ख़ैर—हाँ—ख़ैर तो

अब यों ठीक है [ एक बारगी ]—तुम में से नैन हार्डविक कौन है ?

नैन—मैं हूँ।

डिकसन—अच्छा—तुम हो—हाँ—तो बस यह ठीक है—क्यों मिस्टर ड्रू यह ठीक है ना ?

ड्रू—बेशक। बेशक।

डिकसन—तुम मेरी हार्डविक की लड़की हो—और—और—एडवर्ड हार्डविक की जिसे . . . एँ ?

नैन—जिसे ग्लोस्टर में फाँसी हुई थी—

डिकसन— स्वास्कोम के ज़िले . ख़ैर—हाँ बस तो यह ठीक है—[ औरों की तरफ़ मुड़ कर ] आप लोग इसकी पहचान करते हैं कि यह वही नैन हार्डविक है ?

सब—हाँ—हाँ—है यही—यही है।

डिकसन—बस तो यह ठीक है। . . . डू, यह बिगुल की आवाज़ तो नहीं थी?

डू—अजी नहीं। कहीं भी नहीं।

डिकसन—[ बेग में से थैली और कुछ काग़ज़ निकाल कर ] इस घर में कोई क़लम दवात भी है?

पारजिटर—[ अलमारी पर से दावात क़लम लाकर ] यह क़लम दवात है तो।

डिकसन—यह ठीक है। [ लिखता है ] अरे यह क़लम तो— . . . डू ! तुम्हारे पास कोई क़लम है? [ मिसेज़ पारजिटर से ] इसे पोछने को कुछ चाहिये। [ क़लम को पोंछता है। और फिर उसे चाक़ू से बनाता है। ] अच्छा। ख़ैर तो यह ठीक है। [ सख़्ती से ] नैन हार्डविक तुम्हारे बाप को—क्या कहते हैं उसे—फांसी हुई थी—पेस्टन मैगना के पास।

एक भेड़ी चुराने के इलज़ाम में . . नहीं जवाब मत दो—यह तो वाक़या है—अच्छा—हाँ—तो ख़ैर—बात यह है—कि वह भेड़ी मिस्टर निकल्स की थी और अब यह साबित हो गया है कि तुम्हारे बाप एडवर्ड हार्डविक को इस भेड़ी की चोरी से कोई वास्ता नही था।

—ओ हो!—तो इतनी दूर से क्या आप मुझे यही बताने आये हैं? हज़ार सिपाही तक तो आप ही के नीचे होंगे—संडे, मुसटंडे, जैसे यह खड़ा है। . . जाने कितने लाल बुझक्कड़ जज हैं—लाल लाल झूलें पहने! . . कितने लम्बे घूंगर वाले बालों की टोपियाँ लगाये वकील हैं—और हाल यह है कि एक गली का लौंडा भी—एक राह चलता बच्चा भी—मेरे अब्बा की भोली सूरत देख कर यह बता देता कि वह बेक़ुसूर थे—

डिकसन—यह सब हम कुछ नहीं जानते—करना है तो मतलब की बात करो ! [ डू कुछ कान में कहता है ] क्या? क्या? . . हाँ—हाँ—और नहीं तो क्या—

डू—[ नैन से ] कप्तान डिकसन को अपनी बात पूरी तो कर लेने दो ।

मि० पा०—बच्ची तेरा तमीज़, शऊर सब कहाँ गया? ठहर जा—बोलना बाद को ।

डिकसन—हाँ, तो बात यह है कि यह भेड़ी मिस्टर निकिल्स के गड़ेरिये ने चुराई थी और यही गड़ेरिया तुम्हारे बाप के ख़िलाफ़ ख़ास गवाह था—

नैन—भेड़ी रिचर्ड शेपलेन्ड ने चुराई थी ।

डिकसन—[ नैन की तरफ़ ग़ौर से देख के ] और अब उसने इक़बाल भी कर लिया है ।

सब—अरे ! . . इक़बाल कर लिया ! . . सोचो तो सही ! . . ख़्याल तो करो ! . . यह अंधेर !

डिकसन—बड़ी नाइन्साफ़ी हो गई—अफ़सोस के क़ाबिल ! . . हां—तो ख़ैर। बात यह है कि जब हम सब चाहते हैं कि क़ानून क़ायम रहे फिर अगर इनके ग़लत बरते जाने से हमें कभी कोई नुक़सान पहुँच जाए तो उसे ख़ामोशी से बरदाश्त कर लेना चाहिये। [ घड़ी को देखता है ]

ड्रू—बहुत वक़्त है—अभी बहुत वक़्त है ! ठेरो—

डिकसन—हां तो ख़ैर—लेकिन इस मामले में सरकार ने यह तै किया है कि तुम्हें कुछ मुआविज़ा दिया जावे—

नैन—जान की क़ीमत ? ख़ून का मोल ? . . तीस चाँदी के टुकड़े—

डिकसन—नहीं—ज़्यादा है—पचास अशर्फियें [ थैली उलट देता है ] रसीद देने से पहले गिन के देख लो—

नैन—नहीं मैं नहीं छुऊंगी ! . . ये दुखियारों के लहू में—उनके आँसुओं में लिसी हैं—

ड्रू—इस का जी ठिकाने नहीं है—मैं गिने देता हूं।

दा०—[ नैन के लिये बरांडी निकाल के ] ले नैन, यह एक बून्द पी ले। [ वह इनकार कर देती है ]

सब—पचास अशर्फियाँ ! . . पचास !! . . . कहीं ऐसा भी सुना है—

डिक—[ मुँह ही मुँह में ] घोड़ा और गाड़ी . . मकान का सब सामान भी—

ड्रू—पचास पूरी हैं। पारजिटर—जी चाहे तो तुम भी गिन के देख लो।

फा०—नहीं नहीं भला अब मै क्या गिनूंगा—

डिकसन—[ नैन से ] तुम्हें इतमिनान हो गया ?
[ बिगड़ कर ] नैन हर्डिविक !

नैन—अब आप और क्या चाहते हैं ?

डिकसन—तुम्हें इतमिनान है कि रुपया ठीक है ?

नैन—ओं ! यह रुपये—आप तो जानते ही हैं कि ठीक हैं—फिर इस फ़िज़ूल छान बीन से फ़ायदा ? क़लम मुझे दीजिये—यह लीजिये। रसीद पे नाम लिख दिया—मैं ने—पाईं पचास अश-र्फ़ियाँ नक़द—

डिकसन—और तारीख़ ? ख़ैर—तारीख़ मैं भर लूँगा [ कानिस्टबिल से ] हार्टन इस पर गवाही करदो [हार्टन गवाही करता है । डिकसन घड़ी को दोबारा देखता है ] गाड़ी तो गई हाथ से !

डु०—देखो, अब भी रात को ठहर जाओ—कहता हूँ, मीयाँ मान जाओ! ज्वार भाटे का तमाशा देख के जाना—देखने क़ाबिल चीज़ है!

डिकसन—नहीं नहीं—इनायत, इनायत। मुझे माफ़ रखो [ बेग सम्हालता है ] यह लो हार्टन [ उसे बेग दे देता है ] मैन मुझे उम्मीद है इस रुपये से तुम्हें आराम मिलेगा . . हाँ तो यह गाड़ी मुझे मिलेगी किस जगह पर?

मि० पा०—ठीक गली के नुक्कड़ पर—यह क्या दो क़दम पे है। दहने हाथ को मुड़ कर सीधे चले जाइयेगा। . . छूट नहीं सकती—अभी बहुत वक़्त है। पहले ही से बिगुल सुनाई दे जायेगा।

डिकसन और हार्टन—बन्दगी—सब को बन्दगी।

[ जाते हैं ]

सब—बन्दगी जनाब—बन्दगी कप्तान साहब ।

डिक—[ पारजिटर से ] इन से कुछ पीने-वीने को तो पूछा होता—

पा०—वाह ! वह कहाँ—हम कहाँ ! इन से अपनी तरफ़ से कौन पूछता—

डिक— यह कोई बात नहीं—ज़रा पूछ तो देखते ।

ड्रू—मैं ख़ूब जानता हूँ कि जो कुछ हमने सुना उससे हम सभी को बड़ी ख़ुशी हुई होगी . . नैन ! . . तुम्हें इससे तसल्ली होनी चाहिये या नहीं यह इस वक़्त मैं नहीं कहूँगा कि कहीं तुम्हारा दिल न दुखे . . पर इतना तो मैं कह सकता हूँ कि तुम्हारी नेक मामी जिन्हों ने तुम्हारे लिये इतना कुछ किया है —

मि० पा०—यह क्या मिस्टर ड्रू—जो किया भी तो

अपना फ़र्ज़ उतारा—अपनों को कौन नहीं करता।

डू—[ मज़े में आकर ] आप शरमाती क्यों हैं? लीजिये मैं कुछ नहीं कहता . . और देखिये आप लोग भी कुछ न कहियेगा . . पर इतना तो मैं कह सकता हूँ कि आप सब साहब भी मेरी तरह से ख़ुशी —

[ डिकसन का फिर आना ]

डिकसन—भई डू —माफ़ करना!—मगर ज़रा मुझे यह तो दिखा दो कि गाड़ी मिलेगी कहाँ पर? यह कमबख़्त गलियाँ तो बस—

डू—हाँ, हाँ, क्यों नहीं—बेशक, बेशक—
[ लोगों से ] बन्दगी—सब साहबों को बन्दगी। मुझे अफ़सोस है कि हमने आके आपके मज़े में ख़लल डाला—

मि० पा०—अजी यह क्या कहते हैं आप ! जो ख़ुशी हुई है यह हम ही जानते हैं—

ड्रू—[ नैन से ] नैन ज़रा बात तो सुन !—अब तुझे नैन कहूँ या मिस हार्डविक ? अब तो तू बड़ी जायदाद वाली हो गई ! . . सुन ! मिसेज़ ड्रू ने ज़रा कल तुझे घर पे बुलाया है। वह चाहती हैं कि अगर तू मंज़ूर करे तो तुझे घर का सब काम काज सौंप दें—वहीं बनी रहना ।

डिकसन—चलो भाई चलो !

ड्रू—चला कप्तान डिकसन—अभी चला ! . . अच्छा सुन, तो फिर इस पर कल बातें करेंगे—क्यों है ना ?

नैन—बड़ी मेहरबानी । मिसेज़ ड्रू से भी मेरा सलाम कह दीजियेगा । पर मैं कल तो आप

के यहाँ किसी तरह नहीं आ सकती . . हाँ
एक तरह हो सकता है—बस एक ही तरह कि
कल सारे मछेरे जो कुछ भी माल पकड़ें आप
का दसवाँ हिस्सा बटवाने के लिये आपके
घर ले आवें—

ड्रू—[ घबरा कर ] हैं यह क्या ! . ख़ैर—जो
कुछ भी हो सोचना ! सोचना '—बात कान में
पड़ी रहने दो ।

नैन—ज़रूर ज़रूर ऐसी पड़ी रहे कि फिर
कभी न निकल सके ।

ड्रू—भई सब को बन्दगी—आईये कप्तान डिकसन—

[ जाता है ]

[ लौट आता है ] मिसेज़ पारजिटर !

मि० पा०—जी ? [ उसे एक कोने में ले जाता है और
नैन की तरफ़ इशारा करके चुपके चुपके कहता है ]

डू—खुला दो इसे—अभी फ़ौरन, खुला दो !

[ नैन कटकर मुस्कुराती है ]

मि० पा०—अभी लो अभी—दुखिया का जी लौट गया है ! और—लौट न जाये तो क्या हो—बात ही ऐसी है !

[ जाता है ]

मि० पा०—शुकर है—टले तो कहो ! [ औरों से ] चलो भई—सब अन्दर खाना खाने चलो ! . . हम भी आये । दम भर में । देखो दर्वाज़ा बन्द कर लेना । हवा है कमबख़्त कि आँधी !

[ सब चले जाते हैं ]

डिक—मैं मिस नैन के लिये थोड़ा सा खाना लाता हूँ—

मि० पा०—बड़ी मुश्किल है भईया !— अपने फटे को

तो सियो,—परोस्मी के फटे में हाथ पीछे डालना ! जाओ ज़रा जैनी की ता ख़बर लेओ !

पा०—नैन मसल मशहूर है कि बारह बरस पर घूरे के भी दिन फिरते हैं । . . जानती है—मैं और तेरे अब्बा दोनों साथ के खेले हैं । चिड़ियाँ पकड़ते, अन्डे निकालते घूमते फिरा करते थे ! . पक दफ़ा बड़ा तमाशा हुआ—बच्चों की दौड़ हुई । आलू की—मटर की—और दोनों में उन्हों ने हम सब को पीट दिया ! . . आज जो मालूम हुआ उसे सुनकर सचमुच मुझे तो बड़ी ख़ुशी हुई ।

नैन—सच मुच—बड़ी ख़ुशी हुई ?

मि० पा०—मैं तो समझती हूं कमबख़्त तेरा तवे का सा दिल न होता तो तू भी बहुत ख़ुश होती ! पर हो क्या—कुछ लोग ऐसे होते हैं जो पसीजना ही नहीं जानते—जैसे पत्थर !

पा०—यह भी तो देखो पचास अशर्फ़ियाँ एक अच्छी ख़ासी रक़म है !

नैन—क्यों नहीं !—हैं भी तो एक आदमी की जान की क़ीमत ! अच्छी ख़ासी तो होवें हीं गी !

पा०—नैन तू इस रुपये से दो बातें कर सकती है—बङ्क में जमा कर दे और सूद लिया कर या मुझे दे मैं ख़ुशी से उधार ले लूं और तुझे सूद देता रहूँ।

नैन—और जो मैं न मानूं तो क्या होगा ?

मि० पा०—तू न माने ?—अरी—तू—उफ़्फ़ाह ! चढ़ गईं थी बस्रो आसमान पे ! यह तो हम जानते ही थे—

पा०—[ बात काट के ] तुम्हारी मर्ज़ी पे है । मैं तो यह चाहता था कि रुपया घर ही में रहे।

मि० पा०—[ पारसिटर से ] इसकी मरज़ी पर ! अच्छा !! बस लगे तुम हिलाने—तू शाहज़ादी मेरी ! मैं हूँ रइयत तेरी । इस में मरज़ी-टरज़ी का क्या बीच है ! . . . सुन री—इधर—सुन ! तू अभी बच्चा है । हम तेरे बड़े हैं । इस रुपये को हम सहेज के तेरे लिये रक्खेंगे ।

नैन—क्यों नहीं ! सहेजोगी क्यों नहीं ! जेनी के दहेज़ के लिये भी तो कुछ होना चाहिये ना !

पा०—[ गुस्से को रोक कर ] देखो मैं अभी कुछ नहीं बोला—

मि० पा०—तुम बोलोगे क्या ! कुछ दम गूदा हो तो बोलो ! भीगी बिल्ली कमबख़्त भी तुम से अच्छी होगी ।

पा०—[ गुस्से में ] मूंह बन्द रहे ! ख़बरदार जो मुझ से ज़बान चलाई !

मि० पा०—चलो हटो—मुझ पे मत ग़ुर्राओ ! मैं बहुत तुम्हारा रोब दाब देख चुकी ! . धोबी से जीतें नहीं—गधे के कान उमेठें ।

नैन—रुपया मेरा है ! तुम से क्या ? मुझे इस का काम है—

पा०—[ नैन से ] तो चलो बस हमारा तुम्हारा तो ख़तम हुआ ! . . तुम जैसी हो वैसी ही बेशउरी की बातें करती हो ! . . तुम इन्हें जो मुंह में आता है कह देती हो—सख़्त से सख़्त—जिसे अच्छा-बिच्छा आदमी सुन के पागल हो जाए ! . . जाओ ! करो जो जी चाहे इस रुपये का—मगर तुम्हें मेरे कटोरे टोबी का बदला तो देना ही होगा ! . . बोलो ? . इस में क्या कहती हो ?

नैन—तुम्हारा टोबी ? . . कटोरा ?

पा०—बनो मत ! खूब जानती हो मैं क्या कह रहा हूँ—

नैन—अहा—मेरी छोटी सी बहिन ! मेरी नन्ही सी बहिन ! [ अन्दर से चीख़ की आवाज़ आती है ] यह उस की रूह के रोने की आवाज़ है—उस की रूह की ! शायद यही कुछ—

मि० पा०—और क्यों री मौक़ा पाके चुपके चुपके सब मुरब्बा उपर से ढकोस गई !

पा० —ख़ैर—बस—मैं तो यह चला ! अब तू जाने—तेरा दीन ईमान जाने । [ जाता है ]

मि० पा०—ज़रा छुरी तले दम लो चिल्ल ! अभी दो टूक हो जाये तो अच्छा है—इधर या उधर !

नैन—अच्छा-अच्छा ! लो अभी दो टुक हुआ जाता है ! [ रुपये की थेली के पास जाती है और उसका फ़ीता काट देती है ] देखो— इसे देखो ! [ रुपये का ढेर लगा

देती है ] यह कंचन है—कंचन !!—छोटे छोटे, पीले पीले, गोल गोल, मुर्दा धात के टुकड़े ! पचास,—छोटे, पीले, गोल गोल, धात के टुकड़े, और यही,—यही मुझे एक आदमी की जान के बदले में दिये जा रहे हैं !! . . हाय ! ओ छोटे, पीले, गोल, ठीकरों तुम क्या हो ? वही जिस से हम वला-बत्तर ख़रीदते हैं ! हाय—यह तुम्हारी सूरत कोई देखे ! तुम्हारी आवाज़ कोई सुने ! [ ख़ामोशी ] . बस चुप रहो—इस वक़्त मुझे मत छेड़ो ! [ ख्यालों में डूबी हुई ] . . एक गांव में एक तन्दुरुस्त मज़बूत आदमी रहता था—बड़ा दयालु—बड़ा मोहब्बती ! . . उन्नचास बरस की उसकी उमर थी। छावनी के काम में उसकी बराबरी दूर दूर तक कोई बन्धानी नहीं कर सकता था। . . गाना वह ऐसा मीठा गाता था कि सुनने वालों का

दिल हिल जाता था। मैं ने आप देखा है—खेतों को जाते हुये गाँव में अब्बा का गाना सुन कर, ठिठक ठिठक कर रह जाते थे! . . फिर क्या हुआ?—एक दिन अचानक कुछ लाल कुरतों वाले आये—एक लबार ने झूठी क़सम खाई—और उस तन्दुरुस्त मज़बूत आदमी को उसी पे जान से मार डाला! —अचानक—जैसे बिजली कौन्द जाये—एक रस्सी के टुकड़े से उसकी मोहनी आवाज़ हमेशा के लिये घोट दी गई!! . . न जाने कहां कहां से जहान भर के झूठे, लबारिये, चोर उचक्के, औरतें नशों में चूर—भले मानस,—गन्दे, बदन से बू निकलती हुई, गोल के गोल आ आकर इकट्ठे हो गये थे! . . सारी रात जाड़े पाले में पड़े ठिठरा किये कि उस ग़रीब के गला घुटने का तमाशा देखें! सारी रात ताश खेल

खेल के काटी कि सवेरे उस दुःखियारे के गोलों का सदा के लिये बन्द हो जाना देख लें !! . . हाय, यह रस्सी बस आवाज़ ही को घोट डालती है !! . . मारने से पहले मेरे बाबू के मुँह पर एक घटाटोप चढ़ा दिया कि आखिर वक्त में वह अपनी बिलकती बच्ची को न देख सकें ! [ सन्नाटा ] और इस सब के बदले में मुझे आज यह पीले पीले गोल गोल, ठीकरे दिये जाते हैं !! [ सन्नाटा ] . . उसी गांव में एक लड़की रहती थी—एक दुखिया बे मां बाप की बच्ची—जिसका दिल बिपता से चूर चूर हो चुका था ! . . तुम्हें खबर है उसका क्या हाल हुआ ? . . तुम जानते हो—तुम खूब जानते हो ! . . वह अपने अज़ीज़ों में आई, जो उसका बहुत कुछ भला कर सकते थे, क्योंकि वह दुखियारी

मेहर मोहब्बत के दो बोलों के बदले में इन पर अपना सभी कुछ वार दे सकती थी ! . .
यह ऐसी घायल—ऐसी विपता की मारी थी, कि जहां कोई दो मीठे शब्द बोला, उस का दिल भर आता था और वह बिलक बिलक के रोती थी !—

मि० पा०—अलाप ले—जी भर के अपना राग अलाप ले ! फिर मैं भी कुछ कहूँगी !—

नैन—चुप रहो ! धमकियाँ मत दो—आज यह सब तुम्हें सुनना होगा !! . . मैं तुम्हारे बस में आन पड़ी थी। मेरा बनाओ, बिगाड़ तुम्हारे हाथ में था—सो तुमने मुझ में जो अच्छी बातें थीं इन्हें गिराया—जी भर के ठुकराया—मेरे मोहब्बती मीठे स्वभाव को कड़ुआ ज़हर बनाया ! . . जो कुछ मुझ में तेज़ी चतुराई थी उसे लीप पोत बराबर कर दिया . . मैं

बेबसथी—जैसे मक्खी मकड़ी के जाले में !
. . तुम अपना कपट जाल मेरे चारों तरफ़
बिनती जाती थी। मैं इसमें उलझती जाती थी—
फँसती जाती थी ! . . हाय, फिर यही जाल
मेरा कफ़न बन गया—मैं इसमें लिपट कर रह
गई—और दुनिया की कोई .खुशी—दुनिया का
कोई सुख चैन, मेरे लिये न रह गया ! . .
हाय, मेरा यह दम घुट घुट के रह गया
है !—मेरा कलेजा पक पक के .खून हो गया—
काला—सियाह—जैसे इस दवात की सियाही !!
. . और इस सब के लिये आज मुझे यह
छोटे छोटे, पीले पीले, गोल गोल ठीकरे दिये
जाते हैं !! [ कुछ रुक कर और आवाज़ बदल कर ]
"यह ढेर का ढेर,"—अरे यह एक हो कि हज़ार
हों अब यह मेरे किस काम के हैं ! मेरे अब्बा
की मौत, तुम्हारी बातों के तीर, मेरी हलकानी—

बरबादी, मेरे दिल का ख़ून, यह सब एक ग़लती थी—एक छोटी सी भूल—जो बात की बात में जब तक एक भले मानस की गाड़ी आवे आवे—एक मुट्ठी भर खाने के टीकरों से टाल कर दी जा सकती थी !! . . इस भले मानस को यह सारी विपता याद भी नहीं आई। उस का इधर ध्यान भी नहीं गया। और जाता कैसे—उस की जान तो गाड़ी में अटकी हुई थी ! . . असल तो असल दिखावे के लिये भी दो मीठे बोल इसके पास न थे ! [अन्दर से चीख़ की आवाज़]—हाँ, हाँ, इस ने अपने को देख लिया है। फिर चीखें न मारे तो क्या करे ! इसे मुरदा ढोने वाली गाड़ी आती दिखाई दे रही है—

[डिक दरवाज़े में से सर निकालता है]

डिक—अम्मा ! जेनी के पास आओ—दौड़ो ! दौड़ो जल्दी !!

मि० पा०—जहन्नुम में जाये जेनी ! मुझे उस से ज़रूरी काम यहाँ करना है—

डिक—उसे दौरा सा हो रहा है—न जाने क्या है ? सब मिल के भी उसे नहीं सम्भाल सकते !

पा०—[ नैन से ] यह भी तेरे ही करतूत हैं ! ठहर तो जा, मैं अभी आती हूँ !!

लड़की—[ दर्वाज़े से ] दौड़ो मिसेज़ पारजिटर दौड़ो !
[ मिसेज़ पारजिटर बरांडी की बोतल लेकर झपटती है ]

पा०—नैन, क्या जाने क्या होने वाला है ! [बाहर जाता है ] [ डिक आता है ]

डिक०—मिस नैन, लेओ मैं यह ज़रा सा कुछ मुँह में डालने को ले आया।

नैन—तो क्या करूँ?

डिक०—हाँ--मगर मिस नैन बैठ के दो निवाले खा न लो? यह लो—मैं कुरसी ठीक किये देता हूँ—

नैन—क्यों भई यह मेरे लिये तुम क्यों लाये?

डिक—मैं समझा—मेरे दिल में यह आया कि शायद मैं कुछ तुम्हारा ग़म ग़लत कर सकूँ—

नैन—मुझे कुछ नहीं चाहिये—बिल्कुल कुछ नहीं!

डिक—मिस नैन, मैं एक बात कहना चाहता था। पर क्या कहूँ कुछ कहते नहीं बनता। फिर भी मुझे माफ़ कर दो। . . मिस नैन, मैं तुम से माफ़ी माँगता हूँ—हाथ जोड़ के! . . मेरी मोहनी मेरी सुन्दरी—मैंने तेरा बड़ा दिल दुखाया!

नैन—मेरा दिल दुखाया—हाँ तो फिर?

डिक—मुझे न जाने क्या हो गया था—क्या बताऊँ ! बस बातों में आ गया—मिस नैन—बातों में आ गया !

नैन—सचमुच डिक—तो बस तुम बातों में आ गये—यह क्यों ? कैसे ?

डिक—यही हुआ—बातों में आ गया ! . . जब मैं ने तुम्हारे बाप का सुना—मेरा मतलब है कि जब मैं ने तुम्हारे बाप का वह सब सुना—तो न जाने क्या हुआ—ऐसा मालूम होता था कि मैं क्या बताऊँ ! . . देखो ज़बान पे कांटे से पड कर रह गये हैं—आवाज़ नहीं निकलती ! . . मिस नैन—

नैन—हाँ तो कैसा मालूम होता था ? बोलो ?

डिक—ऐसा मालूम होता था जैसे तुम्हारे बालों की फाँसी मेरे गले में पड़ गई हो !—दम घुटा

आता था, जी लौटा आता था, दिल मानता ही नहीं। क्या कहूँ! किसी तरह नहीं मानता—

नैन—बस यही एक बात थी? और तो कोई नहीं?

डिक—बस यही थी मिस नैन—!

नैन—तो फिर यह जेनी कैसे पसन्द आगई? . . अभी मेरे प्यार का मज़ा, मेरे चुम्बों की गर्मी तुम्हारे होंठों पर बाक़ी थी! [ उस के पास जा कर ] अभी तो हमारे दिल की धड़कन हमारे ख़ून की सनसनाहट भी कम न हुई थी—कि तुम मुझ से फिर गये! . . क्यों यह आख़िर जेनी क्यों पसन्द आई?—इस लिये कि उसके बाप को फाँसी नहीं हुई थी · क्यों? बोलो?

[ ख़ामोशी ]

[ डिक अपने होंठ और गला तरकरने की कोशिश करता है । जैफ़र हलके हलके आता है । कुछ गुलाब के फूल बाग़ से चुन लाया है । नैन के पास जाता है ]

ज़फ़र—पूनों का चांद अपने पूरे जोबन पर है—ग़ज़ब ढा रहा है! अजब बहार है! . . गाएं, जुगाली बन्द किये, खेतों में बैठी हैं . . . ख़रगोश झाड़ियों में से निकल आये हैं—मगर ठिठक कर रह गए हैं! . . जंगल के फूलों ने अपने सर नीचे झुका लिये हैं! सब पर ही इसका जादू चला हुआ है!! . . मेरी चांद सी सुन्दरी यह फूल हैं, गुलाब के, तेरे बालों के लिये! . आ, मेरे चांद के टुकड़े तेरी बराबरी कोई दुनिया जहान में नहीं कर सकता।

[ बड़े अदब से गुलाब देता है ]

यह फूल अपने बालों में सजा लो, और दुलहन की तरह इन्हें खोल डालो।

[ नैन बालों में फूल लगा लेती है और उन्हें खोल देती है ]

नैन—[ कुछ अशर्फ़ियाँ ले कर ] ओफ़्फ़, यह सफ़ेद पत्थर के दाम—गोर के पत्थर के—[ सम्हल के ]—हाँ तो फिर डिक ?

डिक—मेरी कमबख़्ती—कहूँ तो क्या कहूँ ? . . बात यह थी कि मैं तुम्हें दिखाना चाहता था कि मुझ को तुम से अब कुछ वास्ता नहीं रहा—गुस्सा आ गया था ना !

नैन—मैं ने अपने आप की बात जो तुम्हें नहीं बताई थी—इसी पर—क्यों ?

डिक—बस इसी पर—

नैन—दुनिया में डिक तीन मौक़े ऐसे होते हैं जब औरत से बोला नहीं जाता !—बड़ी प्यारी, बड़ी अनमोल घड़ियाँ ! . . एक तो, जब वह अपने प्यारे की बातें सुनती होती है—एक, जब वह अपने आप को उसको भेंट करती है

और एक, जब वह एक नन्ही सी जान की मां बनती है । . . जो उस वक्त डिक मैं कुछ कहना चाहती भी तो सब से पहले तुम ही मुझे रोक देते—

डिक—बात यह है कि मैं समझा—मैंने जाना—कि तुम ने जान बूझ कर मुझ से बात छिपाई—मैं ने सोचा—

नैन—और अब तुम जेनी से भी फिर गये—क्यों डिक यह अब तुम ने जेनी को क्यों छोड़ा ?

जैफ़र— [ रुपया गिनता है बजा बजा के ]

नौ—नौ

मौत के घन्टों ख़ूब बजो—ख़ूब बजो,

मौत के घन्टो ख़ूब बजो !

दस—दस

उस घर जाना है बस,

उस घर जाना है बस !

डिक—इस लिये कि असल में मुझे उस का
    तिल भर भी ख़्याल नहीं। और अब—

जैफ़र—ग्यारा—ग्यारा
    अब लाद चलेगा बंजारा,
    अब लाद चलेगा बंजारा।

डिक—चुप रहो जैफ़र ! बस चुप !!

नैन—हाँ—तो फिर अब क्या हुआ ?

डिक—हाय ! मिस नैन—मेरी जान तो तुम पर
    जाती है—मगर जब तक तेरे नाम पर धब्बा था,
    अच्छा मुझे रोक देते ! पर अब कुछ डर—

नैन—बस यही एक बात थी, या और कुछ भी ?

जैफ़र    [बीच में बोलता है]
    बारा—बारह
    बारा का बजा नक्क़ारा,
    बारा का बजा नक्क़ारा।

अब फ़िरिश्ते,—सुनहरे फ़िरिश्ते, आसमान से उतरते हैं ! . . . और शैतान भी बारह के अमल में अन्धेरी—अकेली—सड़कों पे मंडलाते हैं ! . . . भूत—भूत—वह देखो क़बरों के पीछे से सर उठा के झाँक रहे हैं !—मार,—मार इन्हें !! ओ, सुनहरे सवार मार—अपनी तेज़ चमकीली बर्छी से !—

नैन—हाँ, डिक तो बस यही एक बात थी ? और असल में तुम मुझे प्यार करते हो ?

डिक—बस यही एक बात थी । नैन मैं तुझे चाहता हूँ—मेरी तुझ पे जान जाती है !

नैन—और मामी इस पर क्या कहेंगी ?

डिक—जहन्नुम में जाये वह कमबख़्त—उसी ने तो यह सारी उखाड़ पछाड़ की है !

नैन—डिक मैं जानती हूँ तुम उन से क्या कह दे सकते हो ।

डिक—बताओ, क्या कह दूँ ?

नैन—अभी जाओ । यह थैली उनके पास लेते जाओ । उन से कहना कि यह आप ले-लीजिये—और मुझे जेनी के बदले में नैन से शादी करने की इजाज़त दे दीजिये ।

[ डिक धक से रह जाता है । मगर थैली उठाकर हलके हलके दर्वाज़े की तरफ़ जाता है ]

डिक—क्यों नैन क्या यह ठीक न होगा कि हम योंही उनसे कह दें—बिना—बिना इस—

नैन—मैं पहले ही जानती थी—यह तो मैं पहले ही जानती थी !

[ एक बिगुल की दूर से धीमी धीमी आवाज़ आती है ]

जैफ़र—समन्दर में शोर मच रहा है—धीमे भयानक

राग उठ रहे हैं! . . जहाज़ इन रागों को सुन कर डगमग हो रहे होंगे—खिवइये रो रहे होंगे!

—छिः! लौटो—यहाँ आओ!! . . सुनो—कुछ लोगों ने कहा मेरे अब्बा ने एक भेड़ी मार डाली है—और भेड़ी भी ऐसी कि बूढ़ी, डांगर, बेजान—जिस बिचारी को अपने गले पर छुरी चलने तक की ख़बर मुश्किल से हुई होगी— . . फिर भी अब्बा को फांसी हो गई—सिर्फ़ इतनी बात पर कि लोगों की जान में उन्होंने इस दलिद्दर, आख़ोर को मार डाला था!—इसी पर—बस इसी पर उनका गला घोट कर जान निकाल ली गई और आधा शहर खड़ा तमाशा देखा किया!! . . लेकिन तुम आते हो—और एक लड़की को जी भर प्यार करके अपने दिल की हवस

मिटाते हो! . . तुम उससे मोहब्बत भरी प्यारी प्यारी बातें करते हो—ऐसी मीठी, ऐसी मोहनी कि किसी लड़की का दिल इन्हें सुन कर क़ाबू में नहीं रह सकता! . . और क्यों? . . बस इसलिये कि एक लड़की के होंठ तुम्हें अपने होंठों में लेने में बड़ा मज़ा मिलता है! और एक लड़की के मूँह से मोहब्बत भरी बातें सुन कर तुम्हारा दिल ख़ुश होता है! . . फिर अचानक—एक नकचढ़ी बुढ़िया की दो बातों पर तुम इसी लड़की के इन्हीं होंठों को, जिन्हें तुम अभी चूम रहे थे, बेदर्दी से कुचल डालते हो!! . . दम भर में—दस मिनट के अन्दर अन्दर—उसके मोहब्बत भरे दिल को, उसके मान, जान सुख चैन, और दुनिया की सारी ख़ुशियों को मिटा देते हो—मिट्टी में मिला

देते हो ! . . और उसके ख़ाक पे तड़पते—घायल बदन को ठुकराते हो—जी भर के पैरों से रौंदते हो !! . . और फिर कुछ क़लक़ होता है तो बस इतना कि उसके ख़ून में तुम्हारे जूते क्यों लतपत हो गये—

[ बिगुल की आवाज और पास आती जाती है ]

अफ़सर—बिगुल ! बिगुल ! जैसे कोई रात में बोलने वाला घुग्घू जङ्गल में क़हक़हे लगा रहा हो !!

नैन—फिर तुम दूसरी लड़की की तरफ़ मुड़ते हो, उसे अपनाते हो, और दुनिया के सब से बड़े सुख का उसे मज़ा चखाते हो ! . . इतने ही में तुम्हें यह पता चलता है कि वह पहली लड़की इतनी बुरी नहीं है जितना उस बुढ़िया ने बताया था। नहीं—बल्कि उस में भी इस दूसरी का सा रस, इसी का सा सवाद है ! !—जिस

रूप, जिस सवाद को तुम्हारा लोभी दिल, तुम्हारे लोभी होंट सदा ढूँढते फिरते हैं ॥ . . . ऊपर से उस के पास कंचन भी है !—यही पीले पीले, गोल गोल, टुकड़े जिन से दुनिया का सब आडम्बर मिल सकता है—घर, घोड़े, मरतबा ! अब तुम इस के पास फिर कुत्ते की तरह कूँ कूँ करने, दुम हिलाने आते हो कि वह तुम से फिर राज़ी हो जाये !—और किसी न किसी तरह यह रुपया तुम्हारे हाथ लगे ।

डिक०—नैन तुम जो चाहो कह लो—तुम्हें हक़ है ! मगर असल में मेरी तुम पर जान जाती है—मैं तुम पर मरता हूँ ॥

नैन—आज रात को डिक मुझे हर चीज़ शीशे की तरह साफ़ दिखाई दे रही है ! . . . मेरी नज़र सीधी—तीर की तरह तुम्हारे दिल, तुम्हारे

कलेजे के पार जा रही है! . . . मुझ से कुछ छिपा नहीं! . . तुम चोरों की बातें करते हो, तुम ख़ूनियों की बातें करते हो, और उन लोगों की जो औरतों को बदकार बनाते हैं! . . तुम उन्हें पापी, मुजरिम ठहराते हो! . लेकिन असली पापी, असली मुज-रिम तुम हो—तुम जो लोगों के दिलों को ख़ून कर डालते हो! इन्हें पैरों से ऐसे कुचलते हो, मसलते हो, जैसे वह कोई कीड़े मकोड़े हों—जो चलने में तुम्हारे पाँव के नीचे आ जाते हैं!! . . . और फिर तुम्हारे इन सब करतूतों का फल किसे भोगना पड़ता है? . . औरत को! . . . कोनों में छिप छिप कर—बिलक बिलक कर रोनेवाली औरत को!—घायल, मोहताज, दर दर ठोकरें खाने वाली औरत को!— . . उस औरत को जिस

के पास खड़े होने का कोई रवादार नहीं!—जिसे सब ठुकराते हैं—कुचलते हैं, जिस पर सब थूकते हैं—जैसे तुमने डिक, तुमने अभी मुझ पर थूका था . . हाय!—नहीं—कभी हरगिज़ नहीं!!—ओ ख़ूबसूरत बला—अपनी जवानी की उमङ्गों में चूर!! ओ!—औरतों के रस चूसने वाले—अन्धे, लोभी!!—मैं इन औरतों को तुझसे बचाऊँगी—तेरी ख़ुदग़रज़ी से—तेरी अन्धी मस्ती से बचाऊँगी—

डिक—[ सहम जाता है। और डर के मारे ज़ोर ज़ोर से बोलता है जिस में अन्दर के कमरे वाले लोग सुनलें ] मैंने कभी भी नहीं—अम्मा—अम्मा!

जैफ़र—ओ प्रेम, तू बादशाह है! तू शहिन्शाह है!!

नैन—मैं उन औरतों को बचाऊँगी—इधर—मेरे पास को आ!!

डिक—अरे अम्मा ! अम्मा। [ उलटे पाँव दर्वाज़े की तरफ़ को जाता है ]

जैफ़र—आवाज़ आ रही है !—सड़क पर से आ रही है !—सुनहरी टापों की आवाज़ !—सुनहरी टापों की आवाज़ !!

नैन—बचाऊँगी—इन्हें बचाऊँगी—जीती गोर से बचाऊँगी !—घायल दिलों के दोज़ख़ से बचाऊँगी !!—मर—ओ लोभी मर—[ छुरी भोंक देती है। वह गिर पड़ता है ]

डिक—[ ज़मीन से बेहिसी में कुछ उठ कर ] ढोल ढनाढन बजते हैं—बजते हैं—बजते हैं—ढोल ! [ मरता है ]

जैफ़र—[ ताली बजाकर ] ओ रङ्ग रूप की देवी ! तुझ में मेरे सफ़ेद फूल का रङ्ग रूप है !!

[एक शोर और ग़रांटे की आवाज़ आती है। जैसे समन्दर की मौजें बढ़ती आ रही हों ]

जैफ़र—[ चिल्ला कर ] आ रहा है! . . समन्दर के अथाह सोतों में से आ रहा है! . . समन्दर के गिद्ध इसकी आवाज़ को सुन रहे हैं!—अपनी चोंचें चट्टानों पर तेज़ कर रहे हैं!!

[ अन्दर से लोग घबरा कर बाहर निकल आते हैं ]

मि० पा०—[ दौड़ के डिक के पास जाती है ] डिक! डिक! हाय यह क्या हुआ! [ चीख़ मारती है ] अरे यह ग़ज़ब तो देखो! यह तो ख़ून में नहाया पड़ा है—भाप सी उठ रही है—

पा०—बरान्डी—लेओ, यह बरान्डी दे दो! जल्दी करो—जल्दी! वह चला—वह चला—ख़तम भी हो गया बिचारा!!

नैन—[ पानी की आवाज़ का शोर बढ़ता सुनकर ] दरिया बढ़ता आ रहा है!

जैफ़र—ख़ूब चढ़ता आ रहा है!!

नैन—[ हंस हंस कर ] बाढ़ आ रही !—बढ़ती आ रही है !—बढ़ती आ रही है—

मि० पा०—बिल—लेओ—ज़रा यह रुपया तो सम्हा-लो—भाड़ में डालो इस मुई बरान्डी को !

लड़की—पुलीस ! पुलीस ! आरटी—पुलीस को लाना दौड़ के—

नैन—[ दरवाज़े की तरफ़ जाती है। पानी का शोर अब और ज़्यादा है ] कल ज में एक अनोखी मछली होगी—बड़ी अनोखी !—बड़ी ही अनोखी !!

[ जाती है ]

जैफ़र—सिटियां बजाता हुआ—गीत से गाता हुआ गरजता—गुर्राता वह आ रहा है—आ रहा है !! . . सीने के उपर से—होटों के उपर से—आँखों के उपर से—पानी—पानी ! पानी ही पानी—पानी ही पानी !!

[ बिगुल बजता है ]

मि पा०—इधर—मुझे दो !—क्या लटोरा सा लिये खड़े हो !! [ थैली लेकर जल्दी जल्दी रुपया को संदूक में बन्द करती है ]

चलो यह तो ठिकाने से पहुँचा !—अब कहेंगे क्या लोगों से ?

[ गाड़ी का बिगुल बहुत ज़ोर से और साफ़ साफ़ बजता है ]

जेफ़र—बिगुल ! बिगुल !!

[ परदा ]